जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्री उपाधि हेतु CBCS आधारित पाठ्यक्रम

संयुक्ताचार्य/शास्त्री पाठ्यक्रम का विवरण (Hons)

क्र. सं.	पाठ्यांश	क्रेडिट (Theury + Prectical)
1	मुख्य पाठ्यांश (Core Course (CC)) 14 पत्र	6 क्रेडिट प्रति पत्र 14x6 = 84
2	स्वशास्त्रीय वैकल्पिक (Discipline Specific Elective (DSE))(प्रदत्त 8 में से 4 पत्र)	6 क्रेडिट प्रति पत्र 4x6 = 24
3	सामान्य वैकल्पिक (Generic Elective -GE) 4 पत्र	6 क्रेडिट प्रति पत्र 4x6 = 24
4	योग्यताभिवृद्धि अनिवार्य पाठ्यांश (Ability Enhancement Compulsory Course AECC) 2 पत्र	2 क्रेडिट प्रति पत्र 2x2 = 4
5	कौशल विकास पाठ्यांश (Skill Enhancement Courses SEC) प्रदत्त 4 में से 2 पत्र	2 क्रेडिट प्रति पत्र 2x2 = 4
6		कुल 140

पाठ्यक्रम संरचना

प्रथम सेमेस्टर	CC1, CC2, AECC1, GE1 (विषयान्तर से)
द्वितीय सेमेस्टर	CC3, CC4, AECC2 (Ecvivonment), GE2 (विषयान्तर से)
तृतीय सेमेस्टर	CC5, CC6, CC7, SECA, GE3 (विषयान्तर से)
चतुर्थ सेमेस्टर	CC8, CC9, CC10, SECB, GE4 (विषयान्तर से)
पंचम सेमेस्टर	CC11, CC12, DSEA (1 अथवा 2) , DSEB (1 अथवा 2)
षष्ठ सेमेस्टर	CC13, CC14, DSEA (3 अथवा 4), DSEB (3 अथवा 4)

सामान्य

संयुक्ताचार्य/शास्त्री सामान्य पाठ्यक्रम का विवरण

क्र. सं.	पाठ्यांश	क्रेडिट (Theury + Prectical)
1	मुख्य पाठ्यांश (Core Course (CC)) 12 पत्र (क) 2 पत्र – अंग्रेजी (ख) 2 पत्र – भारतीय भाषा (ग) 4 पत्र – चयनित प्रथम शास्त्रसम्बद्ध (घ) 4 पत्र – चयनित द्वितीय शास्त्रसम्बद्ध	12x6 = 72
2	स्वशास्त्रीय वैकल्पिक (Discipline Specific Elective (DSE))(6 पत्र) (क) 2 पत्र – चयनित प्रथम शास्त्रसम्बद्ध (ख) 2 पत्र – चयनित द्वितीय शास्त्रसम्बद्ध (ग) 2 पत्र – शास्त्रान्तर से	6x6 = 36
3	योग्यताभिवृद्धि अनिवार्य पाठ्यक्रम (Ability Enhancement Compulsory Course AECC) 2 पत्र	2x2 = 4
4	कौशल विकास पाठ्यांश (Skill Enhancement Courses SEC) 4 पत्र	4x2 = 8

पाठ्यक्रम संरचना

प्रथम सेमेस्टर	CC1, DSC -1A, DSC-2A, AECC1
द्वितीय सेमेस्टर	CC2, DSC -1B, DSC-2B, AECC2
तृतीय सेमेस्टर	CC3, DSC -1C, DSC-2C, SEC-1, GE-1

चतुर्थ सेमेस्टर	CC4, DSC -1D, DSC-2D, SEC-2, GE-2
पंचम सेमेस्टर	DSE-1A , DSE-2A, AEEC-3, GE-4
षष्ठ सेमेस्टर	DSE-1B , DSE-2B, AEEC-4, GE-5

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – साहित्यम्

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

क. साहित्यदर्पणः विश्वनाथकविराजकृतः (1,9 परिच्छेदौ)

ख. काव्यालंकारसूत्राणि वामनप्रणीतानि (1 तः 4 अधिकरणम्)

इकाई 1	**साहित्यदर्पणः प्रथमपरिच्छेदः (आदितः मम्मटकाव्यलक्षणनिरासं यावत्)** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**साहित्यदर्पणः प्रथमपरिच्छेदः (अवशिष्टोभागः)** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**

इकाई 3 **साहित्यदर्पणः नवमपरिच्छेदः (संपूर्णः)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **काव्यालंकारसूत्राणि वामनप्रणीतानि (1 तः 2 अधिकरणम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **काव्यालंकारसूत्राणि वामनप्रणीतानि (3 तः 4 अधिकरणम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. साहित्यदर्पणः
2. काव्यालंकार

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम / पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति / श्लोक / मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक / तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना** **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – साहित्यम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

क. रघुवंशम् कालिदासकृतम् प्रथमसर्गः

ख. किरातार्जुनीयम् भारविकृतम् प्रथमसर्गः

इकाई 1 **रघुवंशम्–प्रथमसर्गः (1–30 श्लोकाः)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **रघुवंशम्–प्रथमसर्गः (31–60 श्लोकाः)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **रघुवंशम्–प्रथमसर्गः (61 तः अन्त्यं यावत्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग (1–30 श्लोकाः)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग (31–अन्त्यं यावत्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. रघुवंशम्
2. किरातार्जुनीयम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू॰ से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – साहित्यम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

साहित्यदर्पणः विश्वनाथकृतः दशमपरिच्छेदः

इकाई 1	**साहित्यदर्पणः – 10 (आदितः – प्रहेलिकां यावत्)** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**साहित्यदर्पणः (उपमातः स्मरणालंकारं यावत्)** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	**12**

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **साहित्यदर्पणः (रूपकतः उत्प्रेक्षां यावत्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **साहित्यदर्पणः (अतिशयोक्तेः समालंकारं यावत्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **साहित्यदर्पणः (विचित्रालङ्कारात् अन्त्यं यावत्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. साहित्यदर्पणः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना**	**75**
1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – साहित्यम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

क. दशकुमारचरितम् पूर्वपीठिका (पंचोच्छ्वासः)

ख. कादम्बरी (कथामुखम्)

इकाई 1 **दशकुमारचरितम् 1 – 2 उच्छ्वासौ** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ

के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **दशकुमारचरितम् 3 – 4 उच्छ्वासौ** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **दशकुमारचरितम् 5 उच्छ्वासः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **कादम्बरी (आदितः शाल्मलीवृक्षवर्णनपरियंतम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **कादम्बरी (कथामुखे अवशिष्टो भागः)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. दशकुमारचरितम्
2. कादम्बरी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. साहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5

सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – पुराणेतिहास

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य** –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes)** –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

अष्टादशपुराणपरिचयः

इकाई 1	**वाङ्मय परिचयः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**अष्टादशपुराणानि** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**पुराणेतिहासस्य व्युत्पत्ति** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	**12**

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 पुराणानामावश्यकता **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 पुराणानामावैशिष्ट्यम्, पुराणपंचलक्षणम दशलक्षणम च **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. अष्टादशपुराणपरिचयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. पुराणेतिहास शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – पुराणेतिहास
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

क. वाल्मीकिरामायणम् बालकाण्डम् 01–10 सर्गाः

ख. महाभारत्आदिपर्व 01–10 सर्गाः

इकाई 1 **वाल्मीकिरामायणमहत्वम, परिचयज़्च** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **अध्यायाः 01 से 05** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **अध्यायाः 06 से 10** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **महाभारतपरिचयः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **अध्यायाः 01 से 10** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वाल्मीकिरामायणम्
2. महाभारतम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. पुराणेतिहास का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम / पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति / श्लोक / मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक / तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – पुराणेतिहास
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

श्रीमद्भगवद्गीतासम्पूर्णा

इकाई 1 **अध्यायाः 01 एवं 03** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **अध्यायाः 04 एवं 06** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **अध्यायाः 07 एवं 09** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **अध्यायाः 10 एवं 13** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **अध्यायाः 14 एवं 18** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. श्रीमद्भगवद्गीता

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. पुराणेतिहास का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप् से समझेंगे।

6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – पुराणेतिहास
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

पुराणपर्यालोचनम् ले0श्रीकृष्णमणित्रिपाठी

इकाई 1 **वर्णधर्मव्यवस्था** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **आश्रम धर्मव्यवस्था** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **वैदिकीसंस्था** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **समाजव्यवस्था** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **संस्कृतितत्वम्, व्यापारकर्माणि** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. पुराणपर्यालोचनम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. पुराणेतिहास का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।

6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर

विषयः – शुक्लयजुर्वेदः

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

शुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिनसंहितायाः प्रथमद्वितीयाध्यायौ (सस्वरौ) महीधरभाष्यसहितौ

इकाई 1 **प्रथमोऽध्यायः (1 कण्डिकातः 15 कण्डिकापर्यन्तम्)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **प्रथमोऽध्यायः (16 कण्डिकातः 31 कण्डिकापर्यन्तम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **द्वितीयोऽध्यायः (1 कण्डिकातः 8 कण्डिकापर्यन्तम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **द्वितीयोऽध्यायः (9 कण्डिकातः 16 कण्डिकापर्यन्तम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **द्वितीयोऽध्यायः (17 कण्डिकातः 34 कण्डिकापर्यन्तम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. शुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिनसंहितायाः प्रथमद्वितीयाध्यायौ (सस्वरौ) महीधरभाष्यसहितौ

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – शुक्लयजुर्वेदः
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

निरुक्तम् – म.म. मुकुन्दझाबख्शीकृतटीकासहितम् (प्रथमोध्यायः)

इकाई 1 **प्रथमः पादः** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **द्वितीयः पादः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **तृतीयः पादः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **चतुर्थः पादः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **पंचमः पादः, षष्ठः पादः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निरुक्तम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – शुक्लयजुर्वेदः
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

(क) शुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिनसंहितायाः तृतीयोऽध्यायः (सस्वरः)

(ख) महीधरभाष्यम्

इकाई 1 **तृतीयोऽध्यायः (1 कण्डिकातः 15 कण्डिकापर्यन्तम्)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **तृतीयोऽध्यायः (16 कण्डिकातः 30 कण्डिकापर्यन्तम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **तृतीयोऽध्यायः (31 कण्डिकातः 39 कण्डिकापर्यन्तम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **तृतीयोऽध्यायः (40 कण्डिकातः 47 कण्डिकापर्यन्तम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **तृतीयोऽध्यायः (48 कण्डिकातः 63 कण्डिकापर्यन्तम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. शुक्लयजुर्वेदीयमाध्यन्दिनसंहितायाः
2. महीधरभाष्यम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – शुक्लयजुर्वेदः
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

निरुक्तम् (म.म. मुकुन्दझाबख्शीकृतटीकासहितम्) द्वितीयतृतीयाध्यायौ

इकाई 1 **द्वितीयाध्यायस्य प्रथमपादात् तृतीयपादपर्यन्तम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थपादात् षष्ठपादपर्यन्तम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **द्वितीयाध्यायस्य सप्तमः पादः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **तृतीयाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निरुक्तम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – ऋग्वेद

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

ऋग्वेदसहितायाः प्रथमाध्यायस्य सस्वरमंत्रा आश्वलायन गृह्यसूत्रम् 1–2 अध्यायौ

इकाई 1	**वेदपदार्थः, वेदपरिचयः, ऋग्वेदस्यपरिचयः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**आदितः सप्त सूक्तानि** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**अष्टमात् समाप्तिपर्यन्तम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	12

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **आश्वलायन गृह्यसूत्रम् प्रथमाध्यायः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **आश्वलायन गृह्यसूत्रम् द्वितीयाध्यायः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ऋग्वेदसहितायाः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – ऋग्वेद
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

निरुक्तम् – म.म. मुकुन्दझाबख्शीकृतटीकासहितम् (प्रथमोध्यायः)

इकाई 1 **प्रथमः पादः** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **द्वितीयः पादः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **तृतीयः पादः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **चतुर्थः पादः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **पंचमः पादः, षष्ठः पादः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निरुक्तम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – ऋग्वेद
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

(क) ऋग्वेद संहितायाः प्रथमाध्यायस्य सायणभाष्यम्

(ख) पाणिनीय शिक्षा

इकाई 1 **सायणाचार्यस्य वैशिष्ट्यम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **सूक्तानां सारांशः, ऋषिः, छन्दः, दैवतम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **आदितः सप्तसूक्तानां भाष्यम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **अष्टमात् चतुर्दशान्तं भाष्यम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **पाणिनीय शिक्षा सम्पूर्णा** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ऋग्वेद संहितायाः
2. पाणिनीय शिक्षा

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – ऋग्वेद
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

निरूक्तम् मुकुन्द झा बख्शी द्वितीयतृतीयाध्यायौ

इकाई 1 **द्वितीयाध्यायस्य प्रथमपादात् तृतीयपादपर्यन्तम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थपादात् षष्ठपादपर्यन्तम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीय पादौ** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **तृतीयाध्यायस्य तृतीयचुतर्थ पादौ** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निरुक्तम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2.	व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर

विषयः – सामवेद

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य** –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes)** –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

सामवेदसंहितायाः पूर्वार्चिकस्य 1–3 अध्यायानां सायजभाष्यम्

इकाई 1 **वेदपदार्थः, चत्वारोवेदाः, वेदत्रयीति तात्पर्यम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **सामवेदस्य महात्म्यम्, स्वराः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **प्रथमाध्यायस्य मन्त्राः भाष्यं च** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 द्वितीयध्यायस्य मन्त्राः भाष्यं च **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 तृतीयध्यायस्य मन्त्राः भाष्यं च **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सामवेदसंहितायाः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – सामवेद
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

निरुक्तम् – (प्रथमोध्यायः)

इकाई 1 **प्रथमः पादः** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **द्वितीयः पादः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **तृतीयः पादः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **चतुर्थः पादः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **पंचमः पादः, षष्ठः पादः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निरुक्तम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू‌प से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – सामवेद
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

(क) गोमिल गृह्यसूत्रम् प्रथमाप्रपाठकं सभाष्यम्

(ख) नारदीयशिक्षा शोभाकरभाष्यम्

इकाई 1 **गृह्यसूत्रस्य परिचयः, गोमिलगृह्यसूत्रम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **अग्न्याधानकर्म विवेचनम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3	**बलिवैश्वदेवकर्म, दर्शपूर्णमासौ** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 4	**सामगानानि, सूत्रार्थः, प्रयोगश्च** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 5	**नारदीयशिक्षा सम्पूर्णा** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति	12

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. गोमिल गृह्यसूत्रम् प्रथमाप्रपाठकं सभाष्यम्
2. नारदीयशिक्षा शोभाकरभाष्यम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – सामवेद
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

निरूक्तम् मुकुन्द झा बख्शी द्वितीयतृतीयाध्यायौ

इकाई 1 **द्वितीयाध्यायस्य प्रथमपादात् तृतीयपादपर्यन्तम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थपादात् षष्ठपादपर्यन्तम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीय पादौ** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **तृतीयाध्यायस्य तृतीयचुतर्थ पादौ** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निरुक्तम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2.	व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – अथर्ववेदः
C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

अथर्ववेद संहितायाः प्रथमकाण्डस्य सस्वरमन्त्राः कौशिक गृह्यसूत्रम् 1–3 (अध्यायाः) दानिलवृत्तिः

इकाई 1 **वेदपदार्थः, अथर्ववेदस्य महत्वम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **आदितः विंशतिसूक्तानि** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **एकविंशतः प्रथम काण्डान्तानि सूक्तानि** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **पाकयज्ञः, दर्शपूर्णमासौ, शान्त्युदरूं च** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **मेघाजननम्, सौमनस्यकरणम्, निर्ऋतिकर्म, भैषज्यानि वशीकरणम्, स्त्रीकर्म, अन्यानि च कर्माणि** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. अथर्ववेदसंहितायाः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

2. वेद शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – अथर्ववेदः
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

निरुक्तम् – (प्रथमोध्यायः)

इकाई 1 **प्रथमः पादः** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **द्वितीयः पादः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 तृतीयः पादः **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 चतुर्थः पादः **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 पंचमः पादः, षष्ठः पादः **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निरुक्तम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना** **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – अथर्ववेदः
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

1	**वेदपदार्थः, अथर्ववेदस्य महत्वम्**
2	**आदितः विंशति सूक्तानि**
3	**एकविंशतः, प्रथमकाण्डान्तानि सूक्तानि**
4	**पाकयज्ञः, दर्शपूर्णमासो, शान्त्युदकं च**
5	**मेघाजननम्, सोमनस्यकरणम्, निर्ऋति कर्म, भैषज्यानि वशीकरणम्, स्त्रीकर्म, अन्यानि च कर्माणि**

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

(क) अथर्ववेद संहितायाः प्रथमकाण्डस्य सस्वरमन्त्रा

(ख) कौशिकगृह्यसूत्रम् (हारितवृत्तिसहितम्) 1–4 अध्यायाः

इकाई 1 वेदपदार्थः, अथर्ववेदस्य महत्वम् 12

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **आदितः विंशतिसूक्तानि** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **एकविंशतः प्रथम काण्डान्तानि सूक्तानि** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **पाकयज्ञः, दर्शपूर्णमासौ, शान्त्युदरूं च** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **मेघाजननम्, सौमनस्यकरणम्, निर्ऋतिकर्म, भैषज्यानि वशीकरणम्, स्त्रीकर्म, अन्यानि च कर्माणि** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. अथर्ववेद संहितायाः

2. कौशिकगृह्यसूत्रम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4

सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – अथर्ववेदः
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य** –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes)** –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

निरूक्तम् मुकुन्द झा बख्शी द्वितीयतृतीयाध्यायौ

इकाई 1	**द्वितीयाध्यायस्य प्रथमपादात् तृतीयपादपर्यन्तम्** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थपादात् षष्ठपादपर्यन्तम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीय पादौ** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 4	**तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 5	**तृतीयाध्यायस्य तृतीयचुतर्थ पादौ** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति	12

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. निरुक्तम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेद शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – प्राचीनव्याकरणम्
C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

काशिका (जयादित्यवामनकृता) प्रथमोऽध्यायः

इकाई 1	**''वृद्धिरादैच्'' (1.1.1) इत्यतः ''अनेकाल्0'' (1.1.52) इति यावत्** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**''स्वानिवद्0 (1.1.52) इत्यतः ''अपृक्त0'' (1.2.41) इति यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**''तत्पुरुषः समा0'' (1.2.42) इत्यतः ''स्वरितेनाधिकारः'' (1.3.11) इति यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	12

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **"अनुदातङित0" (1.3.12) इत्यतः "विभाषोपपदेन0" (1.3.77) इति यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **"शेषात् कर्त्तरि0" (1.3.78) इत्यतः "तत्प्रयोजको0" (1.4.55) इति यावत्, "प्राग्रीश्वरान्निपाताः" (1.4.56) इत्यतः "विरामोऽवसानम्" (1.4.109) इति यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. काशिका (जयादित्यवामनकृता)

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. प्राचीनव्याकरण शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि)	25
कुल अंक (I+II)	75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – प्राचीनव्याकरणम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

काशिका (जयादित्यवामनकृता) द्वितीयोऽध्यायः

इकाई 1	**"समर्थः पदविधिः" (2.1.1) इत्यतः "पूर्वकालैक0" (2.1.48) इति यावत्** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**"दिक्सङ्ख्यो0" (2.1.49) इत्यतः "कडाराः कर्मधारये" (2.2.38) इति यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	**12**

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **''अनभिहिते'' (2.3.1) इत्यतः ''दूरान्तिकार्थेभ्यो0'' (2.3.35) इति यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **''सप्तम्यधिकरणे च'' (2.3.36) इत्यतः ''चतुर्थी चाशिष्या0'' (3.3.73) इति यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **''द्विगुरेकवचनम्'' (2.4.1) इत्यतः ''द्वितीया टौस्स्वेनः'' (2.4.34) इति यावत्, ''आर्धधातुके'' (2.4.35) इत्यतः ''लुटः प्रथमस्य0'' (2.4.85) इति यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. काशिका (जयादित्यवामनकृता)

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. प्राचीनव्याकरण शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5

सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – प्राचीनव्याकरणम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

काशिका (जयादित्यवामनकृता) तृतीयाऽध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ

इकाई 1 **''प्रत्ययः'' (3.1.1) इत्यतः ''सार्वधातुके यक्'' (3.1.67) इति यावत्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ

के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2	**''कर्त्तरि शप्'' (3.1.68) इत्यतः ''चित्याग्निचित्ये च'' (3.1.132) इति यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**''ण्वुल्तृचौ'' (3.1.133) इत्यतः ''उग्रम्पश्येरम्मद0'' (3.2.37) इति यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 4	**''प्रियवशे वदः खच्'' (3.2.38) इत्यतः ''स्थः क च'' (3.2.77) इति यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 5	**''सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये'' (3.2.78) इत्यतः ''तृन्'' (3.2.135) इति यावत्, ''अलङ्कृञ्0'' (3.2.136) इत्यतः ''मतिबुद्धिपुजार्थेभ्यश्च'' (3.2.188) इति यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति	12

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. काशिका (जयादित्यवामनकृता)

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. प्राचीनव्याकरण शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – प्राचीनव्याकरणम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री | क्रेडिट

काशिका (जयादित्यवामनकृता) तृतीयाऽध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ

इकाई 1	**''उणादयो बहुलम्'' (3.3.1) इत्यतः ''परौ भुवोऽवज्ञाने'' (3.3.55) इति यावत्** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**''एरच्'' (3.3.56) इत्यतः ''इच्छा'' (3.3.102) इति यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**''अ प्रत्ययात्'' (3.3.103) इत्यतः ''अनवक्लृप्त्य0'' (3.3.145) इति यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 4	**'किंकिलास्त्यर्थेषु लृट्'' (3.3.146) इत्यतः ''समानकर्तृकयोः0'' (3.4.21) इति यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 5	**''आभीक्ष्ण्ये णमुल् च'' (3.4.22) इत्यतः ''भव्यगेयप्रवचनीय0'' (3.4.68) इति यावत्, ''लः कर्मणि च भावे0'' (3.4.69) इत्यतः ''छन्दस्युभयथा'' (3.4.117) इति यावत्**	12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. काशिका (जयादित्यवामनकृता)

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. प्राचीनव्याकरण शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1

सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – व्याकरणम्

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (परिभाषाप्रकरणान्ता) बालमनोरमासहिता

इकाई 1	**संज्ञासूत्राधिगमः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**परिभाषासूत्राधिगमः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**अच्–सन्धिसूत्राधिगमः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	**12**

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **हल्सन्धिसूत्राधिगमः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **विसर्गसन्धिसूत्राधिगमः, स्वादिसन्धिसूत्राधिगमः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. व्याकरण शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप् से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।

8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – व्याकरणम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

वैयाकरणसिद्धान्तमौमुदी (अजन्तपुल्लिंगप्रकरणादव्ययप्रकरणान्ता) बालमनोरमासहिता

इकाई 1 **अकारान्तपुल्लिंग–स्त्रीलिंग–नपुसंकलिंगरूपाधिगमः (सर्वनामरहितम्)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **घिनदीसंज्ञकशब्दरूपपुल्लिंगस्त्रीलिंगनपुसंकलिंगरूपाधिगमः (ईकारान्त–ऊकारान्तशब्दरूपप्रबोधः)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **ऋकारान्दैजन्तशब्दरूपाणां लिंगत्रयेऽधिगमः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **सर्वनामरहितहलन्तशब्दानां लिंगत्रये स्वरूपाधिगमः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **हलन्तसर्वनाम्नां लिंगत्रये स्वरूपाधिगमः, अव्ययानामर्थावबोधेन वाक्येषु प्रयोगविज्ञानम्, टाबादिस्त्रीप्रत्ययानां विधानाधिगमः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वैयाकरणसिद्धान्तमौमुदी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. व्याकरण शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – व्याकरणम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (कारकप्रकरणादव्ययीभावान्ता) बालमनोरमासहिता

इकाई 1 **प्रथमाद्वितीयविभक्तयोः विधानापरिज्ञानम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **कारकमुखेन तृतीयादिविभक्तिपरिज्ञानम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **कारकप्रबोधनेन चतुर्थी–पंचमीविभक्तिपरिज्ञानम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **षष्ठीविधानपरिज्ञानम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **कारकमुखेन सप्तमीपरिज्ञानम्, समासस्वरूपप्रबोधनेन अव्ययीभावसमासविधानपरिज्ञानम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. व्याकरण शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/ तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – व्याकरणम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (तत्पुरुषसमासात्समासाश्रयविधिपर्यन्ता) बालमनोरमासहिता

इकाई 1 **तत्पुरुषसमासपरिज्ञानम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **बहुव्रीहिसमासपरिज्ञानम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **द्वन्द्वसमासपरिज्ञानम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **एकशेषसर्वसमासपरिज्ञानम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **समासान्तविधिपरिज्ञानम्, अलुक्समाससमासाश्रयविधिपरिज्ञानम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

2. व्याकरण शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप् से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर

विषयः – फलितज्योतिषम्

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

जन्मपत्रदीपकः

इकाई 1	**पंचांगपरिचयः, इष्टकालसाधनम्, अभीष्टस्थानस्य–सूर्योदयसाधनम्, चालनम्** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**ग्रहस्पष्टीकरणम्, भयात–भभोगसाधनम्, चन्द्रस्पष्टीकरणम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**अयनांशज्ञानम्, पलभाज्ञानम्, चरखण्डसाधनम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	**12**

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **लंकोदयमानानि, स्वोदयमानानि, लग्नसाधनम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **नतसाधनम्, दशमलग्नसाधनम्, ससन्धिद्वादशभावसाधनम्, विंशोपकबलसाधनम्, विंशोत्तरी–दशासाधनम्, अन्तर्दशा–साधनम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. भारतीयकुण्डलीविज्ञानम् – मीठालाल हिंमतराम ओझा, देवर्षि प्रकाशन, वाराणसी।
2. भारतीयज्योतिषम् – शिवनाथ झारखण्डी, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
3. विद्यापीठपंचांगम् – श्रीलालबहादुरशास्त्रिराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, नवदेहली।

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिष शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – फलितज्योतिषम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

मुहूर्त्तचिन्तामणिः (शुभाशुभनक्षत्रप्रकरणे)

इकाई 1	**तिथीनामीशाः, तिथीनां नन्दादिसंज्ञा, रव्यादिवारेषु निषिद्ध–तिथि–नक्षत्राणि, मासेषु शून्यतिथिनक्षत्राणि तेषां परिहारश्च** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**मासेषु शून्यराशयः, तिथीषु शून्यलग्नानि, स्थिरयोगास्तेषां साधनविधिः, अशुभयोगानां परिहारः रवियोगः, वारक्रमेण सर्वार्थसिद्धियोगाः, उत्पातमृत्युकाणसिद्धियोगानां लक्षणनि।**	12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3	**अशुभयोगानां परिहारः, समस्त शुभकार्येषु वर्ज्ययोगः, ग्रासभेदेन शुभाशुभविचारः, सामान्यरूपेण वर्ज्यकार्याणि, कुलिकादि–अशुभमुहूर्त्ताः, वारक्रमेण दूषितमुहूर्त्ताः**	12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4	**अशुभयोगानां परिहारः, होलाष्टकविचारः, भद्राविचारः, भद्रायाः मुखपुच्छ–विभागः, भद्रावासं तत्फलं च, समय–शुद्धिः विचारः, सिंहस्थवक्रातिचारस्थिते गुरौ दोषः, सिंहस्थगुरोः परिहारः, सापवादं लुप्तसंवत्सरदोषाः, वारप्रवृत्तिः, कालहोरेशाः, कालहोरायाः, प्रयोजनम्।**	12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5	**नक्षत्राधिपाः, ध्रुवादिनक्षत्रसंज्ञा, ऊर्ध्वाधस्तिर्यङ्मुखनक्षत्राणि, नववस्त्राभूषणधारणमुहूर्त्तः, स्फूटितनववस्त्रफलम्, वस्त्रधारणेपरिहारः, लतापादपराजदर्शनादिमुहूर्त्तः, औषधसेवन–सूचीकर्ममुहूर्त्तः, विक्रयविपणिमुहूर्त्तः, हस्त्यश्वमुहूर्त्तः, आभूषणनिर्माणमुहूर्त्तः।, नक्षत्राणामन्धादिसंज्ञा, अन्धादिनक्षत्रणां फलानि, धनव्यवहार मुहूर्त्तः, सेवामुहूर्त्तः, ऋणस्यादानप्रदानमुहूर्त्तः, हलप्रवहण मुहूर्त्तः, बीजवपनमुहूर्त्तः, धान्यच्छेदनमुहूर्त्तः, सस्यरोपणकर्णमर्दनमुहूर्त्त, धान्यस्थापनमुहूर्त्तः, शान्तिमंगलकर्ममुहूर्त्तः, होमाहुतिमुहूर्त्तः,**	

अग्निवासविचारः, नवान्भक्षण–मुहूर्तः, रोगमुक्तस्नान–मुहूर्तः, परीक्षामुहूर्तः, प्रेजदाहः, पंचके निषिद्धकार्याणि। **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. मुहूर्तचिन्तामणिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिष शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1

सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – फलितज्योतिषम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

ताजिकनीलकण्ठीप्रथमतन्त्रम्

इकाई 1	**द्वादशराशिस्वरूपम्, राशीनां मित्रामित्रविभागः, वर्षप्रवेशसाधनम्।** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**तिथिसाधनम्, चालनम्, ग्रहस्पष्टीकरणम्, चन्द्रस्पष्टीकरणम्।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**लग्नसाधनम् दशमलग्नसाधनम्, ससन्धिद्वादशभावसाधनम्, पंचवर्गीबलसाधनम्।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य	**12**

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **द्वादशवर्गीसाधनम्, द्वादशभावनां शुभाशुभफलम्, पंचाधिकारिणः, वर्षेशनिर्णयश्च।** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **ग्रहाणां स्वरूपम्, ग्रहाणां दृष्टिः ग्रहमैत्रीचक्रञ्च, षोडशयोगानां लक्षणं फलं च, सहमानयनम्, मुद्दादशा–पात्यंशदशासाधनम्, वर्षफलविवेचनम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ताजिकनीलकण्ठीप्रथमतन्त्रम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिष शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – फलितज्योतिषम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

मुहूर्तचिन्तामणिः

इकाई 1 **सङ्कान्तीनां नामानि, संकान्तेः पुण्यकालः, अयनसंक्रमणेविशेषः, चलसंक्रान्तिसाधनम्, समबृहत्जघन्यसंज्ञक–नक्षत्राणि।** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **कर्कसंक्रान्तेविशोपकाः, संक्रान्तीनां वाहनादयः, संक्रान्तिनक्षत्रात् शुभाशुभफलम्, क्षयाधिमासयोर्लक्षणम्।** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3	**ग्रहणां वेधस्थानानि, जन्मर्क्षात् ग्रहणफलम्, चन्द्रबले विशेषः, नवरत्नानां धारणविधिः, ग्रहाणां प्रीतीये रत्नधारणम्, ताराणां नामानि, तारादेषपरिहारः, चन्द्रावस्थासाधनम्, द्वादशावस्थानामानि, सफलानि ग्रहाणां दोषनाशक–औषधयः, कदा ग्रहाः फलदाः, दुष्टतिथौपरिहारः, ग्रहाणां फलकालः।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 4	**आद्यरजोदर्शने शुभाशुभविचारः, ऋतुमत्याः स्नानमुहूर्त्तः, गर्भाधानमुहूर्त्तः, सीमन्तसंस्कारः, गर्भमासानामधिपाः, पुंसवनमुहूर्त्तः, जातकर्मनामकरणमुहूर्त्तः सूतिकास्नानमुहूर्त्तः, दन्तोत्पत्तिफलम् सूतिकायाः जलपूजामुहूर्त्तः।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 5	**अन्नप्राशनमुहूर्त्तः, भूम्युपवेशनमुहूर्त्तः, कर्णवेधमुहूर्त्तः, शुभकार्ये निषिद्धकालः, मुण्डनमुहूर्त्तः, चौलेदुष्टतारापवादः, विद्यारम्भमुहूर्त्तः।, व्रतबन्धमुहूर्त्तः, गुरुदोषापवादः, उपनयनमुहूर्त्तः, प्रदोषलक्षणम् ब्रह्मोदनसंस्कारः, वेदक्रमेण नक्षत्राणि पुष्पिण्यां मातरि परिहारः, छुरिकाबन्धनमुहूर्त्तः, केशान्तसमावर्तनयोमुहूर्त्तः।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति	12

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. मुहूर्त्तचिन्तामणिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिष शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4

सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – सिद्धान्तज्योतिषम्

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य** –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes)** –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

लीलावती सम्पूर्णा

इकाई 1	**परिभाषा (गणितसम्बन्धिनी), अभिन्नपरिकर्माष्टकम्, भिन्नपरिकर्माष्टकम्** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**इष्टकर्म, द्वीष्टकर्म, संक्रमणगणितम्, वर्गकर्म, गुणकर्म।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**व्यस्तविधिः, त्रैराशिकम्, मिश्रकव्यवहारः।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	12

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4	**श्रेढीव्यवहारः, क्षेत्रव्यवहारः, खाताव्यवहारः।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 5	**चितिव्यवहारः, क्रकचव्यवहारः, राशिव्यवहारः।, छायाव्यवहारः, कुट्टकव्यवहारः, अंकपाशः।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति	12

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. लीलावती सम्पूर्णा

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. सिद्धान्तज्योतिष शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – सिद्धान्तज्योतिषम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

रेखागणितम् (1–4)

इकाई 1 **रेखागणितीयपरिभाषा, स्वयंसिद्धपदार्थाः, अबाध्योपक्रमाः।** 12

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **प्रथमा प्रतिज्ञा, द्वितीया प्रतिज्ञा, तृतीया प्रतिज्ञा, चतुर्थी प्रतिज्ञा, पंचमी प्रतिज्ञा, षष्ठी प्रतिज्ञा, सप्तमी प्रतिज्ञा, प्रथमाध्यायस्याअष्टमी प्रतिज्ञातः पंचदशी प्रतिज्ञां यावत्, प्रथमाध्यायस्य षोडशी प्रतिज्ञातः पंचविंशीं प्रतिज्ञापर्यन्तम्।** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3	**प्रथमाध्यायस्याषडविंशीप्रतिज्ञातः चत्वारिंशीं प्रतिज्ञापर्यन्तम्, प्रथमाध्यायस्यएकचत्वारिंशीप्रतिज्ञातःप्रथमाध्यायसमाप्तिपर्यन्तम्, द्वतीयाध्यायसम्बन्धिपरिभाषाः।**	**12**
	पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	
इकाई 4	**द्वितीयाध्यायस्य प्रथमा प्रतिज्ञातः अष्टमीप्रतिज्ञापर्यन्तम्, द्वितीयाध्यायसमाप्तिपर्यन्तम्, तृतीयाध्यायस्य वृत्तसम्बन्धिन्यः परिभाषाः।**	**12**
	पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	
इकाई 5	**वृत्तस्य केन्द्रान्वेष्णामेवं वृत्तान्तर्गतक्षेत्रनिर्माणज्ञानार्थं तृतीयाध्यायस्य प्रथमाप्रतिज्ञाताः दशमी प्रतिज्ञापर्यन्तम्ः, वृत्तस्य विभिन्नरूपात्मकक्षेत्रज्ञानाय तृतीयाऽध्यायस्य एकादशी प्रतिज्ञातः तृतीयाऽध्यायसमाप्तिपर्यन्तम्।, चतुर्थाध्यायस्य परिभाषासूत्रम्, वृत्तान्तर्गतत्रिभुजचतुर्भुजयोः ज्ञानम्, त्रिभुजान्तर्गतवृत्तचतुर्भुजयोः क्षेत्रनिर्माणज्ञानार्थं चतुर्थाध्यायस्यसमाप्तिपर्यन्ताः प्रतिज्ञाः।**	**12**
	पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति	

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. रेखागणितम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. सिद्धान्तज्योतिष शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप् से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – सिद्धान्तज्योतिषम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

बीजगणितम्, गोलपरिभाषा

इकाई 1	**शिष्यशिक्षार्थं मंगलम्, धनर्णं षड्विधम्, खषड्विधम्।** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**वर्गषड्विधम्, अनेकवर्णषड्विधम्, करणीषड्विधम्।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**कुट्टकः वर्गप्रकृतिः, चक्रवालम्।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 4	**एकवर्णसमीकरणम्, एकवर्णमध्माहरणम्, अनेकवर्णसमीकरणम्।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 5	**सप्तगोलपरिभाषाः, भूगोलस्वरूपम्, गोलः, वप्रक्षेत्रम्, कक्षागोलम्, लघुवृत्तम्, वृत्तम्, व्यासरेखा, लंकारेखादेशाः, स्वपृष्ठस्थानम्, स्वनिरक्षदेशम्, भूपरिधिः, स्पष्टभूपरिधिः, मध्यरेखा, देशान्तरम्, पृष्ठीयकेन्द्रम्, खस्वस्तिकम्, समस्थानम्, ध्रुवस्थानम्, नाडीवृत्तम्, अहोरात्रवृत्तम्, कदम्बस्थानम्, क्रान्तिवृत्तम्।, भस्वरूपम्, ध्रुववृत्तपरिभाषा, याम्योत्तरनिरक्षखस्वस्तिकयोः परिभाषा,**	

पूर्वापरवृत्तम्, अयनवृत्तम्, नतांशोन्नतांशयोः परिभाषा, अक्षांशाः, गोलविभागः, विमण्डलवृत्तम्, दृग्वृत्तम्, उपवृत्तम्, दृक्क्षेपवृत्तम्, क्रान्त्यादि समस्तगोलपरिभाषा। **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. बीजगणितम्
2. गोलपरिभाषा

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. सिद्धान्तज्योतिष शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1

सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – सिद्धान्तज्योतिषम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

सरलत्रिकोणमिति (बलदेवमिश्रः)

इकाई 1	**त्रैकोणमितिककोणस्य परिभाषा, जीवादीनां परिभाषाः, त्रैकोणमितिकधनर्णयोः सम्बन्धः चित्रमाध्यमेन प्रदर्शनम्।** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**कोणीयत्रैकोणमितिकसम्बन्धः, प्रधानत्रैकोणमितिकसम्बन्धाः, त्रिकोणमितौ कोणमापनप्रकारः।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**वृत्तीयगणना, व्यासार्धिककोणास्तुल्याः, ज्यारूप परिणतास्सर्वे त्रैकोणमितिकसम्बन्धाः।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	**12**

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **पंचचत्वारिंशदंशानां त्रैकोणमितिकसम्बन्धाः, षष्ट्यंशानां त्रिशदंशानां तथा विशिष्टकोणानां च त्रैकोणमितिकसम्बन्धाः कोणस्य तत्कोटेश्च त्रैकोणमितिकसम्बन्धः।** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **त्रैकोणमितिकसमीकरणम्, जात्यत्रिभुजगणितसाधनम्, औच्च्यान्तरानयनम्।, विविधाभ्यासार्थं प्रश्नाः।** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सरलत्रिकोणमिति

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. सिद्धान्तज्योतिष शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।

6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – धर्मशास्त्रम्
C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

मनुस्मृतिः – अध्यायः 1, 2

इकाई 1	**सृष्ट्युत्पत्तिः – अपाम् उत्पत्तिः, ब्रह्मणः उत्पत्तिः, महदादीनामुत्पत्तिः, चातुर्वर्ण्यव्यवस्था, दशप्रजापत्यादीनामुत्पत्तिः, मनुदेवयक्षादीनां सृष्टिः।** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**प्राणिनामुत्पत्तिप्रकाराः – जरायुजः, अण्डजः, स्वेदजः, उद्भिज्जः वनस्पतयः, वृक्षादयः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**

इकाई 3 **कालविभागः – निमेषः, काष्ठा, कला, मुहूर्त्तम्, कालपरिमाणम्, सूर्यकृतः दिनरात्रिविभागः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **धर्मोत्पत्तिः – धर्मस्वरूपम्, सदाचारस्य धर्ममूलत्वम्, धर्मोत्पत्तिः, धर्मस्य मूलस्रोतः, धर्मस्य चत्वारः आधाराः, धर्मस्य महत्त्वम्।** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **संस्काराः – जातकस्वरूपम्, नामाकरणस्य स्वरूपम्, निष्क्रमणस्य स्वरूपम्, अन्नप्राशनस्य स्वरूपम्, मुण्डनस्य स्वरूपम्, उपनयनस्य स्वरूपम्।, ब्रह्मचारिणां कर्त्तव्यम् – ब्रह्मचर्याश्रमः, आचमनविधिः, ब्रह्मचारिणां कर्माणि, सन्ध्योपासना, होमादिकर्म, गुरुशिष्ययोः व्यवहारः।** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. मनुस्मृतिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप् से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – धर्मशास्त्रम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य** –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes)** –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री क्रेडिट

पराशरस्मृतिः

इकाई 1	**मुनीनां व्यासं प्रति प्रश्नः, व्यासस्योत्तरम्, वदरिकाश्रमगमनम्, पराशराश्रमवर्णनम्, व्यासकृतपूजनम्, पराशरकृतस्वागतम्, व्यासस्य प्रश्नः, पराशरकृतं चातुर्वर्ण्याचारादिकथनम्।** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**सर्ववर्णानां साधारणधर्मनिरूपणम्।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**सर्ववर्णानां जनने मरणे च शुद्धिकथनम्।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 4	**उद्बन्धने प्रायश्चित्तम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 5	**वृक – श्वान – श्रृगालाद्यैर्दष्टस्य प्रायश्चित्तम्।, क्रौञ्चादिवधप्रायश्चित्तम्।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य	12

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. पराशरस्मृतिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2

सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – धर्मशास्त्रम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

मनुस्मृतिः अध्यायः 3, 4

इकाई 1	**विवाहव्यवस्था – गुरोराज्ञया विवाहः, विवाहस्वरूपम्, विवाहे त्याज्यं कुलम्, विवाहयोग्या कन्या, विवाहे त्याज्या कन्या, भ्रातृरहितायाः कन्यायाः विवाहे स्थितिः।** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**विवाहप्रकारः – ब्राह्मदैवविवाहयोः लक्षणम्, आर्षप्राजापत्यविवाहयोः लक्षणम्, आसुरविवाहस्य लक्षणम्, गान्धर्वविवाहस्य लक्षणम्, राक्षसविवाहस्य लक्षणम्, पैशाचविवाहस्य लक्षणम्।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**स्त्रीणां सम्मानविधानम् – स्त्रीसम्मानविधानस्य लाभाः – स्त्रीसम्मानेन दिव्यलाभप्राप्तिः, पतिपत्न्योः परस्परं सन्तुष्ट्या परिवारस्य कल्याणम्, स्त्रियाः प्रसन्नतायां कुले प्रसन्नता, पतिपत्न्योः परस्परम् अप्रसन्नतायां सन्तत्यभावः, स्त्रीसम्मानस्य तात्पर्यम्, स्त्रीसम्मानस्य औचित्यम्।** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**

इकाई 4 **एकवर्णसमीकरणम्, एकवर्णमध्माहरणम्, अनेकवर्णसमीकरणम्। गृहस्थस्य आजीविका व्रतं च – आयुषः तृतीये भागे गृहस्थजीविका परपीडारहिता भवेत्, जीविकाभेदाः, धान्यसंग्रहीतुः भेदाः, प्रशस्ता जीविका शास्त्राविरुद्धा, स्नातकगृहस्थानां व्रतानि, गृहस्थेभ्यः सत्त्वगुणवद्धकं व्रतम्।** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **त्याज्यं कर्मः – रजस्वलागमनत्यागः, बालसूर्यदर्शनत्यागः, प्रतिग्रहदर्शनत्यागः, दुष्टानां संगतेः त्यागः, अक्षत्रियराज्ञः दानग्रहणत्यागः, वाहनत्वेन त्याज्याः पशवः, धार्मिकचर्याः – वृद्धानामभिवादनम्, यमनियमपालनम्, अतिथिपूजनम्, अग्निहोत्रम्, क्लीबादिना हुतेयज्ञे यद् भोजनं तद् अभक्ष्यम्, मत्तक्रद्धातुराणां भोजनम् अभक्ष्यम्, आतुराणां केशकीटावपन्नभोजनमभक्ष्यम्, पदास्पृष्टं भोजनमभक्ष्यम्, भ्रूणघ्मादीनां भोजनमभक्ष्यम्।** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. मनुस्मृतिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – धर्मशास्त्रम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

पराशरस्मृतिः

इकाई 1 **द्रव्यशुद्धिकथनम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **अकामकृतपापस्य प्रायश्चित्तम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **गवां मरणे प्रायश्चित्तनिर्देशः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **अगम्यागमने प्रायश्चित्तम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **अमेध्यादिभोजने शूद्रान्नभक्षणे च प्रायश्चित्तम्, दुःस्वप्नविचारः, पुनः संस्कारनिमित्तानि, स्नानविधिः, अशक्तस्य वेदाध्ययनम्, शूद्रान्नप्रतिषेधः, भोजने नियमाः, द्रव्यार्जनविधिः, बहुविधप्रायश्चित्तकथनम्।** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. पराशरस्मृतिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5

सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर

विषयः – पौरोहित्यम्

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य** –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes)** –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

(क) रुद्राष्टाध्यायी (सस्वरा) प्रथमाध्यायतः चतुर्थाध्यायपर्यन्तम्

(ख) सम्प्रदायप्रबोधिनीशिक्षा (सम्पूर्णा)

इकाई 1	**प्रथमद्वितीयाध्यायौ (सस्वरौ)** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**तृतीयोऽध्यायः (सस्वरः)** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**

इकाई 3 **चतुर्थोऽध्यायः (सस्वरः)** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **सम्प्रदायप्रबोधिनीशिक्षा (सामान्यप्रकरणम्)** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **सम्प्रदायप्रबोधिनीशिक्षा (स्वरवर्णोच्चारणप्रकरणे, विशेषप्रकरणम्)** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. रुद्राष्टाध्यायी
2. सम्प्रदायप्रबोधिनीशिक्षा

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. पौरोहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – पौरोहित्यम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

ग्रहशान्तिः

इकाई 1 **स्वस्तिवाचनम् संकल्पश्च** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **श्रीगणेशाम्बिकापूजनम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **कलशस्थापनम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **पुण्याहवाचनम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **मातृकापूजनम्, नान्दीश्राद्धम् आचार्यादिवरणं च** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ग्रहशान्तिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. पौरोहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – पौरोहित्यम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

रुद्राष्टाध्यायी (सस्वरा) पंचमाध्यायतः शान्त्यध्यायपर्यन्तम्

इकाई 1 **पंचमोऽध्यायः (सस्वरः)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **षष्ठोऽध्यायः (सस्वरः)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **सप्तमोऽध्यायः (सस्वरः)** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **अष्टमोऽध्यायः (सस्वरः)** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **शान्त्यध्यायः (सस्वरः), स्वस्त्ययनाध्यायः (सस्वरः)** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. रुद्राष्टाध्यायी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. पौरोहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – पौरोहित्यम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

ग्रहशान्तिः

इकाई 1 **सर्वतोभद्रमण्डलस्थापनम् पूजनं च** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **चतुर्लिंगतोभद्रमण्डलस्थापनम् पूजनं च** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **अग्न्युत्तारणम् प्राणप्रतिष्ठा** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **ग्रहमण्डलस्थापनम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **कुशकण्डिका, हवनविधिः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ग्रहशान्तिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. पौरोहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – नव्यन्यायः
C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य** –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes)** –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, आरम्भतः पदार्थसाधर्म्यवैधर्म्यनिरूपणान्ते भागः

इकाई 1	**मंगलवादः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	1. **ईश्वरवादः, 2. पदार्थस्वरूपम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**पदार्थाः 1. द्रव्यम्, द्रव्यत्वजातिसिद्धिः 2. गुणः 3. कर्म 4. सामान्यम् 5. विशेषः 6. समवायः 7. अभावः**	**12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 1. **पदार्थसाधर्म्यवैधर्म्ये, 2. कारणस्वरूपम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 1. **कारणभेदाः, 2. अन्यथासिद्धिः, 3. द्रव्यसाधर्म्यवैधर्म्ये 4. कस्मिन् द्रव्ये के गुणाः सन्तीत्यस्य निर्वचनम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. नव्यन्याय का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – नव्यन्यायः
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री		**क्रेडिट**
	'तर्कामृतम्' चषकसहितम, ''आप्तोक्तः शब्दः प्रमाणम्' इतिग्रन्थमारभ्य'' लङोनद्यतनत्वमतीतत्त्वञ्चार्थ'' इतिजगदीशग्रन्थान्तो भागः	
इकाई 1	**प्रमाणानां परिचयः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**

इकाई 2 1. **शब्दप्रमाणस्वरूपम्, 2. आप्तार्थः, 3. शाब्दकरणव्यापारस्वरूपम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **शाब्दकारणानि 1. आकाङ्क्षा 2. योग्यता 3. आसत्तिः 4. तात्पर्यज्ञानम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **1. वृत्तिः 2. पदस्वरूपम् 3. पदभेदः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **शाब्दबोधप्रक्रिया 1. कर्त्राख्यातस्थलीया 2. कर्माख्यातस्थलीया 3. भावाख्यातस्थलीया, 1. लृटोऽर्थनिर्वचनम् 2. लुटोऽर्थनिर्वचनम् 3. लिटोऽर्थनिर्वचनम् 4. लङोऽर्थनिर्वचनम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. तर्कामृतम्
2. आप्तोक्तः शब्दः प्रमाणम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. नव्यन्याय शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4

सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – नव्यन्यायः
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

''न्यायसिद्धान्तमुक्तावली'', पृथिवीनिरूपणादारभ्य प्रत्यक्षखण्डान्तो भागः

इकाई 1 1. ईश्वरसिद्धिः 2. पृथिवीनिरूपणम् **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2	**1. जलनिरूपणम् 2. तेजोनिरूपणम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**1. वायुनिरूपणम् 2. आकाशनिरूपणम् 3. कालनिरूपणम् 4. दिङ्निरूपणम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 4	**आत्मनिरूपणम् 1. चार्वाकमतम् 2. बौद्धमतम् 3. वेदान्तमतम् 4. सांख्यमतम् 5. स्वसिद्धान्तः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 5	**1. बुद्धिनिरूपणम् 2. जन्यप्रत्यक्षम् 3. द्रव्यप्रत्यक्षकाणप्रदर्शनम्, सन्निकर्षः 1. लौकिकसन्निकर्षः तद्भदश्च 2. अलौकिकसन्निकर्षः तद्भदश्च** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य	12

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. नव्यन्याय शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2

सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – नव्यन्यायः
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री**		**क्रेडिट**
	'तर्कामृतम्' चषकसहितम, ''विधिलिङोऽर्थः कृतिसाध्यत्वे सती'' त्यादिजगदीशग्रन्थमारभ्य शब्दखण्डान्तो भागः	
इकाई 1	**1. ग्रन्थकारपरिचयः 2. प्रमापरिचश्यच** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**1. विधिलिङोऽर्थनिर्वचनम् 2. आशीर्लिङ्–लोट–लृङोऽर्थनिर्वचनम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**1. सन्प्रत्ययार्थः 2. यङ्प्रत्ययार्थः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 4	**1. क्त्वाप्रत्ययार्थः 2. तुमुलोऽर्थः 3. शतृप्रत्ययार्थः 4. शानच्प्रत्ययार्थः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12

इकाई 5 **1. "ननू नीलं घटमानय" इत्यत्र विभक्त्यर्थनिर्वचनम् 2. समासवृत्तिविचारः, 1. नञर्थविचारः 2. एवकारार्थविचारः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. तर्कामृतम्
2. विधिलिङोऽर्थः कृतिसाध्यत्वे सती

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. पौरोहित्य शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर

विषयः – प्राचीनन्यायवैशेषिकः

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, आरम्भतः पदार्थसाधर्म्यवैधर्म्यनिरूपणान्ते भागः

इकाई 1	**मंगलवादः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	1. **ईश्वरवादः, 2. पदार्थस्वरूपम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**पदार्थाः 1. द्रव्यम्, द्रव्यत्वजातिसिद्धिः 2. गुणः 3. कर्म 4. सामान्यम् 5. विशेषः 6. समवायः 7. अभावः**	**12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 1. **पदार्थसाधर्म्यवैधर्म्ये, 2. कारणस्वरूपम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 1. **कारणभेदाः, 2. अन्यथासिद्धिः, 3. द्रव्यसाधर्म्यवैधर्म्ये 4. कस्मिन् द्रव्ये के गुणाः सन्तीत्यस्य निर्वचनम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. नव्यन्याय का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – प्राचीनन्यायवैशेषिकः
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

वैशेषिकसूत्रम्, वृत्तिसहितम् 01–02 अध्यायौ

इकाई 1 **1. भूमिकाभागः 2. प्रथमाध्यायस्य प्रथमाह्निकान्तर्गतानि 01–08 सूत्राणि** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **प्रथमाध्यायस्य प्रथमाह्निकान्तर्गतानि 09–20 सूत्राणि** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **प्रथमाध्यायस्य प्रथमाह्निकान्तर्गतानि 21–32 सूत्राणि** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **प्रथमाध्यायस्य द्वितीयह्निकमात्रम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **द्वितीयाध्यायस्य प्रथमह्निकमात्रम् तः द्वितीयह्निकमात्रम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वैशेषिकसूत्रम्
2. वृत्तिसहितम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. प्राचीनन्यायवैशेषिक शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – प्राचीनन्यायवैशेषिकः
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

''न्यायसिद्धान्तमुक्तावली'', पृथिवीनिरूपणादारभ्य प्रत्यक्षखण्डान्तो भागः

इकाई 1	**1. ईश्वरसिद्धिः 2. पृथिवीनिरूपणम्** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**1. जलनिरूपणम् 2. तेजोनिरूपणम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य	**12**

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **1. वायुनिरूपणम् 2. आकाशनिरूपणम् 3. कालनिरूपणम् 4. दिङ्निरूपणम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **आत्मनिरूपणम् 1. चार्वाकमतम् 2. बौद्धमतम् 3. वेदान्तमतम् 4. सांख्यमतम् 5. स्वसिद्धान्तः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **1. बुद्धिनिरूपणम् 2. जन्यप्रत्यक्षम् 3. द्रव्यप्रत्यक्षकाणप्रदर्शनम्, सन्निकर्षः 1. लौकिकसन्निकर्षः तद्भदश्च 2. अलौकिकसन्निकर्षः तद्भदश्च** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. न्यायशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5

सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – प्राचीनन्यायवैशेषिकः
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

वैशेषिकसूत्रम्, वृत्तिसहितम् 03 – 04 अध्यायौ

इकाई 1 **1. भूमिकाभागः 2. ग्रन्थ–ग्रन्थकारयोः परिचयः** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **तृतीयाध्यायस्य प्रथमाह्निकम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **तृतीयाध्यायस्य द्वितीयह्निकान्तर्गत – आत्मेन्द्रियार्थसनिकर्षे त्यादि सूत्रादारभ्य "यदि दृष्टमन्वक्षमहं देवदत्त इति सूत्रं यावत्।** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **तृतीयाध्यायस्य द्वितीयह्निकान्तर्गत – दृष्ट आत्मनि लिंगे इत्यत आरभ्य "शास्त्रसामर्थ्याच्च" सूत्रं यावत्।** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **चतुर्थाध्यायस्य प्रथमाह्निनकम् तः द्वितीयह्निनकम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वैशेषिकसूत्रम्
2. वृत्तिसहितम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. न्यायशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू‟ से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/ तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर

विषयः – मीमांसा

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

श्री. आपदेवप्रणीतः मीमांसा न्यायप्रकाशः (आदितः वाक्यभेदभयात् कर्मनामधेयं यावत्)

इकाई 1	**आदितः मत्त्वर्थलक्षणानिरूपणं यावत्** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**विधिभेदादरभ्य वाक्यप्राबल्यनिरूपणं यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**प्रकरणनिरूपणादारभ्य समाख्यानिरूपणं यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	12

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **अङ्गानामपूर्वार्थत्त्वनिरूपणादारभ्य प्रवृत्तिक्रमनिरूपणं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **अधिकारविधिनिरूपणमारभ्य परिसंख्याविधिनिरूपणं यावत्, नामधेयनिरूपणमारभ्य वाक्यभेदात् कर्मनामधेयं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. श्री. आपदेवप्रणीतः मीमांसा न्यायप्रकाशः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. मीमासादर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – मीमांसा
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

सायणमाधवाचार्यप्रणीता मीमांसान्यायमाला (प्रथमद्वितीयाध्यायौ)

इकाई 1 **आदितः प्रथमपादसमाप्तिं यावत्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **अर्थवादाधिकरणमारभ्य उद्भिदधिकरणं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **चित्राधिकरणमारभ्य वै वानराधिकरणं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **तत्सिद्ध्यधिकरणमारभ्य विधिमन्त्राधिकरणं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **मन्त्रलक्षणाधिकरणारभ्य सौभराधिकरणं यावत्, रथन्तराधिकरणमारभ्य शाखान्तराधिकरणं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सायणमाधवाचार्यप्रणीता मीमांसान्यायमाला

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. मीमांसादर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – मीमांसा
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

श्री. आपदेवप्रणीतः मीमांसा न्यायप्रकाशः (तत्प्रख्शास्त्रात् कर्मनामधेयमारभ्य ग्रन्थपरिसमाप्तिं यावत्)

इकाई 1 **तत्प्रख्यशास्त्रात्कर्मनामधेयमारभ्य तद्व्यपदेशात् कर्मनामधेयं यावत्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **नामधेयत्वे पंचमप्रकारनिरूपणमारभ्य निषेधानां पुरुषार्थानुबन्धिनिरूपणं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **पर्युदासनिरूपणमारभ्य पर्युदासोपसंहारयोः भेदनिरूपणपर्यन्तम्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **अर्थवादनिरूपणादारभ्य ग्रन्थपरिसमाप्तिं यावत्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **मीमांसाशास्त्रस्य वैशिष्ट्यम्, मीमांसान्यायप्रकाशग्रन्थस्य ग्रन्थकर्तुश्च परिचयः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. श्री. आपदेवप्रणीतः मीमांसा न्यायप्रकाशः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. मीमांसाशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – मीमांसा
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

सायणमाधवाचार्यप्रणीता मीमासान्यायमाला (तृतीयाध्यायः)

इकाई 1 **प्रतिज्ञाधिकरणमारभ्य मन्द्राभिभूत्यधिकरणं यावत्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **इन्द्रपीताधिकरणमारभ्य उदक्त्वाधिकरणं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **उपरिधारणविध्यधिकरणामारभ्य सर्वपृष्टठ्यधिकरणं यावत्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **द्विभक्षणाधिकरणमारभ्य पशुधर्माणामग्नीषोमीयार्थत्वाधिकरणं यावत्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **शाखाहरणाधिकरणमारभ्य ऋत्विजां नियतपदार्थकर्तृत्वाधिकरणं यावत्, अग्नीनां सर्वार्थत्वाधिकरणमारभ्य तृतीयाध्यायसमाप्तिं यावत्** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सायणमाधवाचार्यप्रणीता मीमासान्यायमाला ़

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. मीमांसादर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर

विषयः – अद्वैतवेदान्तः

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

श्रीमद्भगवद्गीता 01 – 03 अध्यायाः शांकरभाष्यसहिता

इकाई 1	**प्रथमाध्यायः सम्पूर्णः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**द्वितीयाध्यायः श्लोकः 01 तः 36 श्लोकं यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**द्वितीयाध्यायः श्लोकः 37 तः 72 श्लोकं यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	12

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **तृतीयाध्यायः श्लोकः 01 तः 20 श्लोकं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **तृतीयाध्यायः श्लोकः 21 तः 43 श्लोकं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. श्रीमद्भगवद्गीता

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेदान्तदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – अद्वैतवेदान्तः
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

पंचदशी 01 – 02 प्रकरणे

इकाई 1 **प्रथमप्रकरणं श्लोकः 01 तः 30 श्लोकं यावत्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **प्रथमप्रकरणं श्लोकः 31 तः 65 श्लोकं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **द्वितीयप्रकरणं श्लोकः 01 तः 37 श्लोकं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **द्वितीयप्रकरणं श्लोकः 38 तः 75 श्लोकं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **द्वितीयप्रकरणं श्लोकः 76 तः 109 श्लोकं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. पंचदशी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

2. वेदान्तदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप् से समझेंगे।

6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – अद्वैतवेदान्तः
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

श्रीमद्भगवद्गीता 04 – 06 अध्यायाः शांकरभाष्यसहिता

इकाई 1 **चतुर्थाध्यायः श्लोकः 01 तः 21 श्लोकं यावत्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **चतुर्थाध्यायः श्लोकः 22 तः 42 श्लोकं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3	**पंचमाध्यायः श्लोकः 01 तः 28 श्लोकं यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 4	**षष्ठाध्यायः श्लोकः 01 तः 24 श्लोकं यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 5	**षष्ठाध्यायः श्लोकः 25 तः 47 श्लोकं यावत्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति	**12**

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. श्रीमद्भगवद्गीता

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेदान्तदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना** **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – अद्वैतवेदान्तः
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

पंचदशी 03 – 05 प्रकरणानि

इकाई 1 **तृतीयाप्रकरणं श्लोकः 01 तः 21 श्लोकं यावत्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **तृतीयाप्रकरणं श्लोकः 22 तः 43 श्लोकं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **चतुर्थप्रकरणं श्लोकः 01 तः 34 श्लोकं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **चतुर्थप्रकरणं श्लोकः 35 तः 69 श्लोकं यावत्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **पंचमप्रकरणं संपूर्णम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. पंचदशी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेदान्तदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू५ से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – विशिष्टाद्वैतवेदान्तः
C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

बुच्चिवेङ्कटाचार्यविरचिता वेदान्तकारिकावली (प्रत्यक्षनिरूपणात् कालनिरूपणान्ता)

इकाई 1	**पाठ्यग्रन्थलेखकयोः परिचयः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**प्रत्यक्षनिरूपणम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**अनुमाननिरूपणम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	12

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **शब्दनिरूपणम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **प्रकृतिनिरूपणम्, कालनिरूपणम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वेदान्तकारिकावली

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेदान्तदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – विशिष्टाद्वैतवेदान्तः
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

बुच्चिवेङ्कटाचार्यविरचिता वेदान्तकारिकावली

(नित्यविभूतिनिरूपणाद् अद्रव्यनिरूपणान्ता)

इकाई 1 **नित्यविभूतिनिरूपणम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **धर्मभूतज्ञाननिरूपणम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 जीवनिरूपणम् 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 ईश्वरनिरूपणम् 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 अद्रव्यनिरूपणे आद्यपंचाद्रव्याणि, अद्रव्यनिरूपणे अंतिमपंचाद्रव्याणि 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वेदान्तकारिकावली

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेदान्तदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – विशिष्टाद्वैतवेदान्तः
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

श्रीभगवद्रामानुजविरचितं श्रीभाष्यम् (जिज्ञासाधिकरणे आदितः लघुसिद्वान्तभागपर्यन्तम्)

इकाई 1 **ग्रन्थप्रयोजननिरूपणभागः** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **सूत्रार्थनिरूपणभागः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **लघुपूर्वपक्षभागः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **लघुसिद्धान्तपक्षभागः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **श्रीभगवद्रामानुजविरचितं श्रीभाष्यम् (ग्रन्थसारः)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. श्रीभगवद्रामानुजविरचितं श्रीभाष्यम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेदान्तदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – विशिष्टाद्वैतवेदान्तः
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री		**क्रेडिट**
	श्रीभगवद्रामानुजविरचितं श्रीभाष्यम् (जिज्ञासाधिकरणे महापूर्वपक्षभागतः महासद्वान्तभागपर्यन्तम्)	
इकाई 1	**महापूर्वपक्षभागे आदितः सर्वपदलक्षणाया अप्यदोषताभागपर्यन्तः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**शास्त्रप्रत्यक्षयोरविरोधभागतः महापूर्वपक्षोपसंहारभागपर्यन्तः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य	**12**

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **महासिद्धान्तभागे आदितः अहमर्थस्य भ्रान्तिसिद्धत्वनिरासभागपर्यन्तः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **ज्ञातृत्वस्य मिथ्यारूपतानिरासभागतः महासिद्वान्तान्तभागपर्यन्तः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **श्रीभगवद्रामानुजविरचितं श्रीभाष्यम् (ग्रन्थसारः)** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. श्रीभगवद्रामानुजविरचितं श्रीभाष्यम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वेदान्तदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – सर्वदर्शनम्
C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (आरम्भतः तेजोनिरूपणपर्यन्तम्)

इकाई 1	**मंगलवादः, ईश्वरसिद्धि, शक्तिसादृश्यपदार्थान्तरखण्डनम्, द्रव्यत्वजातिसिद्धिः, तमसोद्रव्यत्वनिरासः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**द्रव्याणां स्वरूपम्, गुणाः, कर्माणि, सामान्यम्, विशेषः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**

इकाई 3 **समवायः, अभावः, पदार्थानां साधर्म्यम्, कारणानि** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **अन्यथासिद्धः, द्रव्याणां साधर्म्यम्, सभेदं पृथिव्याः लक्षणम्, परमाणुसिद्धिः, अवयविसिद्धिः, घ्राणलक्षणम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **जलत्वजातिसिद्धि रसनेन्द्रियस्य लक्षणम्, जलस्य गुणाः, तेजसः स्वरूपम्, सुवर्णस्य तैजसत्वम्, तेजसत्वजातिसिद्धिः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. सर्वदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – सर्वदर्शनम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

विश्वनाथकृतन्यायसूत्रवृत्तिः (प्रथमोऽध्यायः)

इकाई 1	**विश्वनाथस्य व्यक्तित्वं कृतित्वं च, प्रथमसूत्रस्य व्याख्यानम्, तत्त्वज्ञानस्य लक्षणम्, न्यायशास्त्रस्य लक्षणम्, न्यायशास्त्रस्य प्रवृत्तिः, षोडशपदार्थानां निरूपणस्य प्रयोजनम्**	**12**
	ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ	

के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2	**अपवर्गप्राप्तेः प्रक्रिया, प्रमाणानि, प्रत्यक्षस्य लक्षणम्, अनुमानस्य लक्षणं भेदश्च, उपमानस्य लक्षणम्, शब्दस्य लक्षणम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**प्रमेयाणि, संशयः, प्रयोजनम्, दृष्टान्तः, सिद्धान्तः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 4	**अवयवाः, तर्कः, निर्णयः, वादः, जल्पः, वितण्डा, हेत्वाभासस्य सामान्यस्वरूपम्, सव्यभिचारः, विरुद्ध** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 5	**प्रकरणसमः, साध्यसमः, कालातीतः, छलम्, छलस्य भेदाः, जातिः, तस्याः भेदाः, निग्रहस्थानम्, तस्य भेदाः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति	12

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. विश्वनाथकृतन्यायसूत्रवृत्तिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. सर्वदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/ तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4

सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना** **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन** –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – सर्वदर्शनम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य** –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes)** –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (वायुनिरूपणतः प्रत्यक्षखण्डपर्यन्तम्)

इकाई 1	**वायोः लक्षणम्, वायोः विषयः, आकाशम्, आकाशस्येन्द्रियम्, कालः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**दिक्स्वरूपम्, दिशः भेदाः, आत्मत्वजातिसिद्धिः, ईश्वरः, शरीरमेवात्मा** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**मनसात्मवादस्य खण्डमन्, विज्ञानमेवात्मा इत्यस्य खण्डनम्, नित्यविज्ञानात्मवादस्य खण्डनम्, प्रकृतेः कर्तृत्वस्य खण्डनम्, न्यायवैशेषिकानां नये आत्मनः न्यायवैशेषिकानां नये आत्मनः स्वरूपम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 4	**बद्धः स्वरूपम् तस्याः भेदाश्च, प्रत्यक्षस्य लक्षणम् प्रत्यक्षस्य षड्विधत्वम्, बहिरिन्द्रियजन्यद्रव्यप्रत्यक्षे कारणविमर्शः, निर्विकल्पकप्रत्यक्षम्, सविकल्पकप्रत्यक्षम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 5	**अलौकिकसन्निकर्षस्य स्वरूपम्, सामान्यलक्षणाप्रत्यासतिः, ज्ञानलक्षणाप्रत्यासत्तिः, योगजप्रत्यासत्तिश्च, योगजसन्निकर्षस्य भेदः।**	12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. सर्वदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1

सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – सर्वदर्शनम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

विश्वनाथकृतन्यायसूत्रवृत्तिः (द्वितीयोऽध्यायः)

इकाई 1 **संशयपरीक्षणम्, प्रत्यक्षादीनां प्रामाण्यपरीक्षणम्, प्रमाणस्य प्रामाण्यपरीक्षणम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **प्रत्यक्षप्रमाणस्य प्रामाण्यरूपरीक्षणम्, अनुमानस्य प्रामाण्यपरीक्षणम्, अवयविनः परीक्षणम् वर्तमानकालपरीक्षणम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **उपमानप्रामाण्यपरीक्षणम्, शब्दप्रामाण्यपरीक्षणम्, वेदस्य प्रामाण्यम् वेदस्य पौरुषेयत्वम्, विधिवाक्यम्, अर्थवादवाक्यम्, अनुवादवाक्यम्, ऐतिह्यार्थापत्तिसंभवाभावप्रमाणविमर्शः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **शब्दस्यानित्यत्वविचारः, आकाशवच्छाब्दस्य नित्यत्वविचारः, शब्दपरिणामवादविचारः, वर्णविकासवादविचारः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **पदम्, सन्निधिः, आकांक्षा, योग्यता, व्यक्तिशक्तिवादविचारः, जातिपदार्थविचारः, पदार्थस्वरूपम्, मूर्तविमर्शः, सामान्यपदार्थः।** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. विश्वनाथकृतन्यायसूत्रवृत्तिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. सर्वदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर

विषयः – जैनदर्शनम्

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

आचार्यनेमिचन्द्रविरचितः बृहद्द्रव्यसंग्रहः (मूलमात्रम्)

इकाई 1	**प्रथमाधिकारः – षड्द्रव्यपंचास्तिकायाधिकारः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**द्वितीयाधिकारः – सप्ततत्त्वनवपदार्थाधिकारः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	12
इकाई 3	**तृतीयाधिकारः – मोक्षमार्गाधिकारः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	12

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **ग्रन्थग्रन्थकारपरिचयः, प्राकृतभाषायाः प्राथमिकपरिचयः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **जैनदर्शने द्रव्यतत्त्वमीमांसा** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. आचार्यनेमिचन्द्रविरचितः बृहद्द्रव्यसंग्रहः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. जैनदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – जैनदर्शनम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री**		**क्रेडिट**
	आचार्यसमन्तभद्रविरवितः रत्नकरण्डश्रावकाचारः (श्लोकाः 1–80 पर्यन्तम्)	
इकाई 1	**श्लोकाः 1–40 पर्यन्तम्** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**श्लोकाः 41–80 पर्यन्तम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य	**12**

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **ग्रन्थग्रन्थकारपरिचयः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **जैनदर्शने श्रावकाचारः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **श्रावकाचारविषयकजैनग्रन्थाः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. आचार्यसमन्तभद्रविरवितः रत्नकरण्डश्रावकाचारः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. जैनदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – जैनदर्शनम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

स्वामिकार्तिकेयविरचितः कार्तिकेयानुप्रेक्षा

इकाई 1 **अनित्यानुप्रेक्षा (गाथाः 1–22 पर्यन्तम्)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **अशरणानुप्रेक्षा (गाथाः 23–31 पर्यन्तम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **संसारानुप्रेक्षा (गाथाः 32–73 पर्यन्तम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **ग्रन्थग्रन्थकारपरिचयः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **द्वादशानुप्रेक्षाविमर्शः, अनुप्रेक्षाध्यानम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. स्वामिकार्तिकेयविरचितः कार्तिकेयानुप्रेक्षा

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. जैनदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – जैनदर्शनम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

आचार्यकुन्दकुन्दविरचितः रयणसारः (श्लोकाः 1–80 पर्यन्तम्)

इकाई 1 **गाथाः 01–20 पर्यन्तम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **गाथाः 21–40 पर्यन्तम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **गाथाः 41—60 पर्यन्तम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन—उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य—दर्शन आदि की सम्मति—विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **गाथाः 61—80 पर्यन्तम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन—उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य—दर्शन आदि की सम्मति—विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **ग्रन्थग्रन्थकारपरिचयः, शौरसेनीप्राकृतभाषायाः स्वरूपम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन—उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य—दर्शन आदि की सम्मति—विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) —

1. आचार्यकुन्दकुन्दविरचितः रयणसारः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. जैनदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) —

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ—साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप् से समझेंगे।

6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर

विषयः – निम्बार्कदर्शनम्

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री — **क्रेडिट**

इकाई 1 **लघुमंजूषा (1–2 अध्याय)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **लघुमंजूषा (3–4 अध्याय)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 3 **गीतातत्त्वप्रकाशिका (1–3 अध्याय)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 4 **गीतातत्त्वप्रकाशिका (2 अध्याय)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 5 **गीतातत्त्वप्रकाशिका (4–5 अध्याय)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. लघुमंजूषा
2. गीतातत्त्वप्रकाशिका

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शन शास्त्र का इतिहास
2. निम्बार्क दर्शन परिचय

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – निम्बार्कदर्शनम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

इकाई 1 **सिद्धान्तमन्दाकिनी (पूर्वार्द्धः)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **सिद्धान्तमन्दाकिनी (उत्तरार्द्धः)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 3 **सिद्धान्तमन्दाकिनी (अन्तिमभागः)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 4 **गीतातत्त्वप्रकाशिका (6–7 अध्याय)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ

के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 5 **गीतातत्त्वप्रकाशिका (8–9 अध्याय)** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

3. सिद्धान्तमन्दाकिनी
4. गीतातत्त्वप्रकाशिका

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

2. दर्शन शास्त्र का इतिहास
3. निम्बार्क दर्शन परिचय

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

9. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
10. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
11. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
12. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
13. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
14. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
15. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
16. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1

सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

6. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
7. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
8. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
9. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
10. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – निम्बार्कदर्शनम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री		क्रेडिट
इकाई 1	**लघुमंजूषा** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 2	**लघुमंजूषा** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 3	**गीतातत्त्वप्रकाशिका** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	12
इकाई 4	**गीतातत्त्वप्रकाशिका** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ	12

के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 5 **गीतातत्त्वप्रकाशिका** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. लघुमंजूषा
2. गीतातत्त्वप्रकाशिका

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शन शास्त्र का इतिहास
2. निम्बार्क दर्शन परिचय

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1

सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – निम्बार्कदर्शनम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

इकाई 1 **सिद्धान्तमन्दाकिनी** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **सिद्धान्तमन्दाकिनी** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 3 **सिद्धान्तमन्दाकिनी** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 4 **गीतातत्त्वप्रकाशिका** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ

के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 5 **गीतातत्त्वप्रकाशिका** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सिद्धान्तमन्दाकिनी
2. गीतातत्त्वप्रकाशिका

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. दर्शन शास्त्र का इतिहास
2. निम्बार्क दर्शन परिचय

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1

सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – बौद्धदर्शनम्

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

पंचस्कन्धप्रकरणम्

इकाई 1	**1 स्कन्धः पूर्वार्ध** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**1 स्कन्धः उत्तरार्द्धः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**2 स्कन्धः पूर्वार्ध** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	**12**

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **2 स्कन्धः उत्तरार्द्ध** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **ग्रन्थसारांश** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. पंचस्कन्धप्रकरणम्ः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. बौद्धदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – बौद्धदर्शनम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

त्रिस्वभावनिर्देशः

इकाई 1 **स्वभाव–धर्म–परिचयः** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **प्रथम स्वभावः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **द्वितीय स्वभावः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **तृतीय स्वभावः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **निःस्वभावता परिचयः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. त्रिस्वभावनिर्देशः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

2. बौद्धदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – बौद्धदर्शनम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

पंचस्कन्धप्रकरणम्

इकाई 1	**3 स्कन्धः पूर्वार्ध** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**3 स्कन्धः उत्तरार्द्धः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**

इकाई 3 **4 स्कन्धः पूर्वार्ध** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **4 स्कन्धः उत्तरार्द्ध** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **ग्रन्थसारांश** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. पंचस्कन्धप्रकरणम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. बौद्धदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।

6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – जैनदर्शनम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री

त्रिस्वभावनिर्देशः

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. त्रिस्वभावनिर्देशः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. बौद्धदर्शन शास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम / पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति / श्लोक / मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – प्राकृतजैनागमः

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

प्राकृतभाषापरिचयः

इकाई 1	**प्राकृत व्याकरणप्रवेशिका** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**प्राकृत अभ्यास सौरभे 1–15 पाठाः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**प्राकृत अभ्यास सौरभे 16–39 पाठाः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	**12**

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **प्राकृत गद्य पद्य सौरभम् 3, 4, 6 पाठाः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **प्राकृत गद्य पद्य सौरभम् 9, 11 पाठाः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. प्राकृतभाषापरिचयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. जैनदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – प्राकृतजैनागमः
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य** –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes)** –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

प्राकृतजैनग्रन्थपरिचयः

इकाई 1	**पंचत्थिकायो – द्वितीयश्रुतस्कन्धः 105–120 गाथाः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**पंचत्थिकायो – द्वितीयश्रुतस्कन्धः 121–135 गाथाः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य	**12**

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **पंचत्थिकायो – द्वितीयश्रुतस्कन्धः 136–153 गाथाः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **गोम्मटसारः जीवकाण्डः – गुणस्थानाधिकारः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **गोम्मटसारः जीवकाण्डः – उपयोगाधिकारः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. प्राकृतजैनग्रन्थपरिचयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. जैनदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – प्राकृतजैनागमः
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य** –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes)** –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री

प्राकृतभाषापरिचयः

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. प्राकृतभाषापरिचयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. जैनदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – प्राकृतजैनागमः
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री

प्राकृतजैनग्रन्थपरिचयः

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. प्राकृतजैनग्रन्थपरिचयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. जैनदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5

सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – प्राचीनराजनीतिशास्त्रम्

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

कामन्दकीयनीतिसारः

इकाई 1	**कामन्दकीयनीतिसारे (ग्रन्थप्रस्तावः)** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**कामन्दकीयनीतिसारे 1 सर्गः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**कामन्दकीयनीतिसारे 2 सर्गः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	**12**

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **कामन्दकीयनीतिसारे 3 सर्गः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **कामन्दकीयनीतिसारे 4 सर्गः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. कामन्दकीयनीतिसारः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. राजनीतिशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – प्राचीनराजनीतिशास्त्रम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री**		**क्रेडिट**
	चाणक्यनीतिदर्पणम्	
इकाई 1	**चाणक्यनीतिदपर्णम् अध्याय 1** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**चाणक्यनीतिदपर्णम् अध्याय 2** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य	**12**

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 चाणक्यनीतिदपर्णम् अध्याय 3 **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 चाणक्यनीतिदपर्णम् अध्याय 4 **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 चाणक्यनीतिदपर्णम् अध्याय 5 **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. चाणक्यनीतिदर्पणम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. राजनीतिशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – प्राचीनराजनीतिशास्त्रम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

कामन्दकीयनीतिसारः

इकाई 1	**कामन्दकीयनीतिसारे 5 सर्गः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**कामन्दकीयनीतिसारे 6 सर्गः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य	**12**

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **कामन्दकीयनीतिसारे 7 सर्ग पूर्वार्द्ध** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **कामन्दकीयनीतिसारे 7 सर्ग उत्तरार्द्ध** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **कामन्दकीयनीतिसारे (ग्रन्थान्तरतुलना)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. कामन्दकीयनीतिसारः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. राजनीतिशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – प्राचीनराजनीतिशास्त्रम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) पाठ्यांश का उद्देश्य –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

चाणक्यनीतिदर्पणम्

इकाई 1 **चाणक्यनीतिदपर्णम् अध्याय 6** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2	**चाणक्यनीतिदपर्णम् अध्याय 7**	**12**
	पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	
इकाई 3	**चाणक्यनीतिदपर्णम् अध्याय 8**	**12**
	पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	
इकाई 4	**चाणक्यनीतिदपर्णम् अध्याय 9**	**12**
	पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	
इकाई 5	**चाणक्यनीतिदपर्णम् अध्याय 10**	**12**
	पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति	

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. चाणक्यनीतिदर्पणम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. राजनीतिशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – वल्लभदर्शनम्

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

सर्वनिर्णय

इकाई 1 **सर्वनिर्णये पूर्वार्द्धे मंगलश्लोकविवरणम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **सर्वनिर्णये पूर्वार्द्धे अर्धभागः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **सर्वनिर्णये पूर्वार्द्धे सम्पूर्णम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 सर्वनिर्णये उत्तरार्धे अर्धभागः 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 सर्वनिर्णये उत्तरार्धे सम्पूर्णम् 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सर्वनिर्णय

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैष्णवदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना** **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – वल्लभदर्शनम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

ईशोपनिषद् केनोपनिषद्

इकाई 1 **उपनिषत्समन्वयः शुद्धाद्वैत** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **ईशोपनिषदि अष्टौ मन्त्राः (सभाष्यम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **ईशोपनिषदि अवशिष्टा मन्त्राः (सभाष्यम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **केनोपनिषदि – 1–2 खण्डौ** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **केनोपनिषदि 3–4 खण्डौ** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ईशोपनिषद्
2. केनोपनिषद्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैष्णवदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – वल्लभदर्शनम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री

सर्वनिर्णय

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सर्वनिर्णय

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैष्णवदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – वल्लभदर्शनम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

तैत्तिरीयोपनिषद्

इकाई 1 **उपनिषत्परिचयः** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **तैत्तिरीयोपनिषद् 1 वल्ली** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **तैत्तिरीयोपनिषद् 2 वल्ली** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **तैत्तिरीयोपनिषद् 3 वल्ली** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्यान्तरपरिचयः** 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. तैत्तिरीयोपनिषद्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैष्णवदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर

विषयः – रामानन्ददर्शनम्

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

प्रमेयपरिशोधिनी

इकाई 1	**प्रमेयपरिशोधिन्याम आदितः दशश्लोकाः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**प्रमेयपरिशोधिन्याम 11 तः 25 श्लोकाः** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**प्रमेयपरिशोधिन्याम प्रथमपरिच्छेदः (आन्तम्)** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	**12**

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **प्रमेयपरिशोधिन्याम द्वितीयपरिच्छेदेपूर्वार्धः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **प्रमेयपरिशोधिन्याम द्वितीयपरिच्छेदेउत्तरार्धः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. प्रमेयपरिशोधिनी

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैष्णवदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।

8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – रामानन्ददर्शनम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

केनोपनिषद्

इकाई 1 **केनोपनिषदि 1 खण्डभाष्य** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **केनोपनिषदि 2 खण्डभाष्य** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **केनोपनिषदि 3 खण्डभाष्य** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **केनोपनिषदि 4 खण्डभाष्य** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **केनोपनिषदि तात्पर्य विमर्शः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. केनोपनिषद्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैष्णवदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रू॰ से समझेंगे।

6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – रामानन्ददर्शनम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री**		**क्रेडिट**
	तैत्तिरीयोपनिषद्	
इकाई 1	**उपनिषत्परिचयः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**तैत्तिरीयोपनिषद् 1 वल्ली** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**

इकाई 3 **तैत्तिरीयोपनिषद् 2 वल्ली** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **तैत्तिरीयोपनिषद् 3 वल्ली** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्यान्तरपरिचयः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. तैत्तिरीयोपनिषद्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैष्णवदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।

6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – रामानन्ददर्शनम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

कठोपनिषद्

इकाई 1 **कठोपनिषद परिचयः** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **कठोपनिषदि 1 वल्ली** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **कठोपनिषदि 2 वल्ली** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **कठोपनिषदि 3 वल्ली** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **कठोपनिषदि तात्पर्यविमर्शः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. कठोपनिषद्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैष्णवदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर

विषयः – द्वैतवेदान्तः

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

खण्डनत्रयम्

इकाई 1	**खण्डने पूर्वपक्षपरिचयः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**प्रथम खण्डनम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**द्वितीय खण्डनम्** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	**12**

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **तृतीयखण्डनम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **खण्डनग्रन्थसमीक्षा** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. खण्डनत्रयम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैष्णवदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – द्वैतवेदान्तः
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री		क्रेडिट
	केनोपनिषद्	
इकाई 1	**केनोपनिषदि 1 खण्डभाष्य** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**केनोपनिषदि 2 खण्डभाष्य** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**

इकाई 3 केनोपनिषदि 3 खण्डभाष्य **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 केनोपनिषदि 4 खण्डभाष्य **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 केनोपनिषदि तात्पर्य विमर्शः **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. केनोपनिषद्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैष्णवदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – द्वैतवेदान्तः
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

तैत्तिरीयोपनिषद्

इकाई 1 **उपनिषत्परिचयः** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **तैत्तिरीयोपनिषद् 1 वल्ली** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **तैत्तिरीयोपनिषद् 2 वल्ली** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **तैत्तिरीयोपनिषद् 3 वल्ली** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्यान्तरपरिचयः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. तैत्तिरीयोपनिषद्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैष्णवदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना** **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – द्वैतवेदान्तः
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

कठोपनिषद्

इकाई 1	**कठोपनिषद परिचयः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**कठोपनिषदि 1 वल्ली** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**

इकाई 3 **कठोपनिषदि 2 वल्ली** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **कठोपनिषदि 3 वल्ली** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **कठोपनिषदि तात्पर्यविमर्शः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. कठोपनिषद्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैष्णवदर्शन का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – वेदनैरुक्तप्रक्रिया

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य** –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes)** –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

शिक्षाग्रन्थः

इकाई 1 **पाणिनीय शिक्षा** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **याज्ञवल्क्य शिक्षा** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **नारदीय शिक्षा** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 माण्डूकीय शिक्षा 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 शिक्षाविज्ञानेतिहासः 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. शिक्षाग्रन्थः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – वेदनैरुक्तप्रक्रिया
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

वेदांगगृह्यकल्पाध्ययनम्

इकाई 1 **पिंगले वैदिकच्छन्दः प्रकरणम्** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **ऋक्प्रातिशाख्यस्य छन्दः प्रकरणम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **कात्यायनीयच्छन्दः सूत्रम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **वेदांगज्योतिषम् (लगधमुनिकृतम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **कात्यनीयो मूल्याध्यायः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. पिंगल छन्दः शास्त्रम्
2. ऋक्प्रातिशाख्यम्
3. कात्यायनप्रातिशाख्यम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिक साहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – वेदनैरुक्तप्रक्रिया
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

शुक्लयजुर्वेदः आदितः पंचअध्यायः

इकाई 1 **शुक्लयजुर्वेदः 1 अध्यायः** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **शुक्लयजुर्वेदः 2 अध्यायः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य

आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 शुक्लयजुर्वेदः 3 अध्यायः 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 शुक्लयजुर्वेदः 4 अध्यायः 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 शुक्लयजुर्वेदः 5 अध्यायः 12

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. शुक्लयजुर्वेदः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – वेदनैरुक्तप्रक्रिया
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

शुक्लयजुर्वेदः 6 तः 10 अध्यायः

इकाई 1	**शुक्लयजुर्वेदः 6 अध्यायः** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**

इकाई 2 शुक्लयजुर्वेदः 7 अध्यायः **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 शुक्लयजुर्वेदः 8 अध्यायः **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 शुक्लयजुर्वेदः 9 अध्यायः **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 शुक्लयजुर्वेदः 10 अध्यायः **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. शुक्लयजुर्वेदः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5

सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)
कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – वेदविज्ञानम्
C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

यजुर्वेदसूक्तानुशीलनम्

इकाई 1	**अध्यायः 3** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**अध्यायः 16** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**अध्यायः 31** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	**12**

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **अध्यायः 32** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **अध्यायः 40** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. यजुर्वेदसूक्तानुशीलनम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) 25

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – वेदविज्ञानम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

वेदविज्ञानपरिचयः

इकाई 1 **विज्ञानप्रवेशिकाभूमिका** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **विज्ञानप्रवेशिका** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **वेदस्य सर्वविद्यानिधानत्वम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **सन्ध्योपासन विज्ञानम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **उपनिषद विज्ञानम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. वेदविज्ञानपरिचयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप् से समझेंगे।

6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – वेदविज्ञानम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री**

सन्ध्यावन्दनभाष्यम्

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सन्ध्यावन्दनभाष्यम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – वेदविज्ञानम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री**

अत्रिख्यातिः

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. अत्रिख्यातिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना** **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)

मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर

विषयः – गणितज्योतिषम्

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

1. बीजगणितम् (आदितः करणीषड्विधम्–एकवर्णसमीकरणं च) कुट्टक–वर्गप्रकृति–चक्रवालांशरहितम्)
2. गोलपरिभाषा (सम्पूर्णा)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. बीजगणितम्
2. गोलपरिभाषा

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।

3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – गणितज्योतिषम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

मुहूर्त्तचिन्तामणिः (आदितः विवाहप्रकरणान्तो भागः)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

मुहूर्त्तचिन्तामणिः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।

2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – गणित ज्योतिषम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

ग्रहलाघवम् (आदितः स्पष्टाधिकारपर्यन्तम्)

उक्त विषय पाँच इकाईयों में विभक्त होंगे।

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. ग्रहलाघवम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5

सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – गणितज्योतिषम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य** –

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes)** –

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री**

1. रेखागणितम् (3 एवं 4 अध्यायौ)
2. जन्मपत्रदीपकम्

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. रेखागणितम्
2. जन्मपत्रदीपकम्

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3

सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

शास्त्रिपाठ्यक्रमः (सम्मानितः) (B.A. Honours)
मूलपाठ्यक्रमः (Core Course)

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर

विषयः – सामुद्रिक ज्योतिषम्

C-1

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

बृहत्संहिता

इकाई 1	**अध्यायाः 1–3** ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ/अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता	**12**
इकाई 2	**अध्यायाः 7–9** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे	**12**
इकाई 3	**अध्यायः 21 (20 श्लोकाः)** पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति	**12**

का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **अध्यायः 47 (20 श्लोकाः)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **अध्यायः 50 (20 श्लोकाः)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. बृहत्संहिता

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।

7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य प्रथम सेमेस्टर
विषयः – सामुद्रिक ज्योतिषम्
C-2

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री **क्रेडिट**

हस्तविज्ञानः पंचांगपरिचयः

इकाई 1 **पंचांग विज्ञाने पूर्वार्द्धः** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **हस्तरेखाविज्ञाने पूर्वार्द्धः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **हस्तरेखाविज्ञाने उत्तरार्द्ध :** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **पंचांगविज्ञानेः उत्तरार्द्धः** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **सामुद्रिकशास्त्रमहत्त्वम्** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. हस्तविज्ञानः
2. पंचांगपरिचयः

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।

5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/ तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना** **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – सामुद्रिक ज्योतिषम्
C-3

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) **पाठ्यसामग्री** **क्रेडिट**

बृहत्संहिता

इकाई 1 **अध्यायाः 4–6** **12**

ग्रन्थपरिचय, ग्रन्थकारपरिचय, ग्रन्थ का ऐतिहासिक विवरण, सम्पूर्ण ग्रन्थ का प्रतिपाद्य संक्षेप, ग्रन्थ नाम की सार्थकता, ग्रन्थ के विभागों का नाम व विवरण, शास्त्रीय विश्लेषण, अर्थ / अनुवाद, व्याख्यान, विशिष्टता

इकाई 2 **अध्यायाः 10–12** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 3 **अध्यायः 21 (20 श्लोक तः सम्पूर्णम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 4 **अध्यायः 47 (20 श्लोक तः सम्पूर्णम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे

इकाई 5 **अध्यायः 50 (20 श्लोक तः सम्पूर्णम्)** **12**

पंक्तियों के समन्वय हेतु प्रायः संस्कृत में विवरण एव अपेक्षा रहने पर छात्र के अनुकूल भाषा का आश्रय लेते हुए शास्त्रीय पद्धति का अनुसरण होना आवश्यक है। उन–उन सिद्धान्त पर अन्य आचार्य–दर्शन आदि की सम्मति–विमति का भी तुलना करते चलेंगे तथा सम्पूर्ण पाठ्यांश का सारांश, पूर्व में की गई विवेचनाओं की पुनरावृत्ति

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. बृहत्संहिता

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।
4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप् से समझेंगे।

6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य द्वितीय सेमेस्टर
विषयः – सामुद्रिक ज्योतिषम्
C-4

Marks (75+25 = 100) Credits = Letures 60 + Tutorial 12

(A) **पाठ्यांश का उद्देश्य –**

प्रस्तुत विषय को चयन करने वाले छात्रों को विषय की सामान्य रूपरेखा का ज्ञान एवं शास्त्रीय शैली से परिचय करवाना।

(B) **पाठ्यांश अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes) –**

यह पाठ्यांश छात्रों को उक्त विषय पर साफ अवधारणा को विकसित करने में सहायक करेगा। छात्र इस पाठ्यांश के अध्ययन के उपरान्त विभिन्न ग्रन्थकारों एवं सिद्धान्तों से सम्बन्धित मूल चिन्तन एवं चिन्तन की शैली को आत्मसात् करने में समर्थ होंगे। इसी प्रकार विषय से सम्बन्धित आधुनिक चिन्तन एवं उपयोगिताओं के बारे में छात्रों में मौलिक विचार शीलता में अभिवृद्धि होगी।

(C) पाठ्यसामग्री

सामुद्रिकरहस्य

(D) पाठ्यपुस्तकें (अनिवार्य पाठ्यग्रन्थ) –

1. सामुद्रिकरहस्य

अतिरिक्तपाठ्य ग्रन्थ

1. ज्योतिषशास्त्र का इतिहास

(E) अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया (Teaching Learning Process) –

1. संस्कृत छात्रों का शास्त्रीय परिचय प्रायः प्रथमवार हो रहा है। अतः क्रमिक अभिगम की संस्तुति की जाती है।
2. ग्रन्थ की पंक्तियों को अध्यापक उच्च स्वर में उच्चारण कर यथासम्भव छात्रों की उच्चारणशैली का परीक्षण एवं परिमार्जन करते रहेंगे।
3. छात्रों को ग्रन्थ के प्रतिपाद्य को समझाने के साथ–साथ समास एवं सन्धियों से भी परिचित करवाते रहेंगे।

4. कारिकाओं अध्यापन समय में अन्वय को दोहराते हुए बोलेंगे।
5. विषम/पारिभाषिक पदों का व्युत्पादन एवं निर्वचन को छात्र अनिवार्य रूप से समझेंगे।
6. पद एवं पंक्ति/श्लोक/मन्त्र के अनुवाद एवं व्याख्यान में अध्यापक छात्रों की सहायता करेंगे।
7. पाठ्यांश में प्रसक्त सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं मूल्यपरक बिन्दुओं व उनकी समसामयिक प्रासंगिकता पर चर्चा करते हुए छात्रों को मौलिक एवं मानवीय चिन्तन हेतु अध्यापक की सावधान व केन्द्रित रहेंगे।
8. शास्त्रपरम्परा के अनुसार ग्रन्थ के प्रत्येक प्रतिपाद्य को समझाकर अध्यापक उनका समीक्षात्मक/तुलनात्मक विवरण करेंगे।

(F) साप्ताहिक योजना –

सप्ताह 1	यूनिट 1
सप्ताह 2	यूनिट 1
सप्ताह 3	यूनिट 1
सप्ताह 4	यूनिट 2
सप्ताह 5	यूनिट 2
सप्ताह 6	यूनिट 3
सप्ताह 7	यूनिट 3
सप्ताह 8	यूनिट 4
सप्ताह 9	यूनिट 4
सप्ताह 10	यूनिट 5
सप्ताह 11	यूनिट 5
सप्ताह 12	यूनिट 5

(G) मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री प्रथम सेमेस्टर
सामान्य हिन्दी (MIL)

प्रथम सेमेस्टर

1. साहित्य खण्ड – गद्य–पद्य की निर्धारित रचनाएँ।

UNIT-1

गद्य भाग – निम्नांकित पाठ निर्धारित हैं –

1. कहानी — बड़े घर की बेटी (प्रेमचन्द)
2. संस्मरण — प्रणाम (महादेवी वर्मा)
3. रेखाचित्र — बाईस वर्ष बाद(बनारसी दास चतुर्वेदी)

UNIT-2

1. विज्ञान — शनि सबसे सुन्दर ग्रह (गुणाकर मुळे)
2. निबन्ध — गेंहू और गुलाब (रामवृक्ष बेनीपुरी)

पद्य–भाग – निम्नांकित कविताएँ निर्धारित हैं –

UNIT-3

1. **कबीर –** 1. मन रे! जगत रहिये भाई, 2. हमारे राम रहीम करीता केसौ, अलह राम सति सोई, 3. काजी कौन कतेब बखानै, 4. मन रे! हरि भजि, हरि भजि हरि भजि भाई, 5. है मन भजन कौ प्रवान
2. **सूरदास –** 1. किलकत कान्ह घटुरुवनि आवत, 2. मुरली तऊ गोपालहिं भावत, 3. देखौ माई सुन्दरता कौ सागर, 4. जसोदा बार–बार यौं भाखै, 5. चित दै सुनौ स्याम प्रवीन।

UNIT-4

1. **तुलसीदास** – 1. कबहुँक अंब अवसर पाई, 2. अबलौं नसानी अब न नसैहौं, 3. मोहि मूढ़ मन बहुत बियोगौ, 4. ऐसौ को उदार जग मांही, 5. मन पछितैहैं अवसर बीते
2. **रहीम पद** – 1. छवि भावन मोहनलाल की, 2. कमल दल नैननि की उनमानि। दोहा 1. प्रीतम छवि नैननि बसी, 2. बसि कुसंग चाहत कुसल, 3. रहिमन अंसुआ नैंन ढरि, 4. रहिमन औछेनरन सौं बैर भलौ ना प्रीति, 5. रहिमन निज मन की बिथा, 6. काज परै कछु और है, 7. खैर खून खाँसी, खुसी बैर प्रीति मदपान, 8. दादु मोर किसार मन लग्यो रहे घन माँहि, 9. पावस देखि रहीम मन कोइल साधै मौन, 10, रहिमन बिगरी आदि को बनै न खरचे दाम।

3. पदमाकर – कवित्त 1. कूलन में केलिन में कछारन में कुंजन में, 2. और भाँति कुंजन में गुंजरित भौंर भीर, 3. पात बिनु कीन्हें ऐसी भांति गुन बेलिन के, 4. चितै चितै चारों ओर चौंकि चौंकि परै त्योंहीं। सवैया 5. या अनुराग की लखौं जहँ......, 6. फाग के भीर अभीरन में गहि गोविन्द लै गई भीतर गोरी।

UNIT-5

व्याकरण खण्ड – निबन्ध (शब्द सीमा 300 शब्द), कार्यालय लेख शासकीय–अर्द्धशासकीय पत्र, परिचय, अधिसूचना, कार्यालय ज्ञापन, विज्ञप्ति, कार्यालय आदेश। संक्षेपण, पल्लवन

मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना**	**75**
1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि)	**25**
कुल अंक (I+II)	**75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री प्रथम सेमेस्टर

सामान्य अंग्रेजी (MIL)

ESSENTIAL LANGUAGE SKILIS

The syllabus aims at achieving the following objectives :

1. Introducing students to phonetics and enabling them to consult dictionaries for correct pronunciation (sounds and word stress)
2. Reinforcing selected components of grammar and usage.
3. Strengthening comprehension of poetry, prose and short-stories.
4. Strengthening compositional skills in English for paragraph writing, CVs and job applications.

The Pattern of the Question Paper will be as follows:

All questions will be compulsory. Questions will be set covering all the sections of the units with scope for internal choice.

Unit-1 Phonetics

I. Transcription of Phonetic Symbols

II. Word Stress

Unit-2 Vocabulary

I. Synonyms and Antonyms

II. Word formation-Prefix, Suffix

Unit-3 Grammar and Usage

I. Transformation of Sentences

1. Direct and Indirect Narration
2. Active and Passive Voice
3. Interchange of degrees of Comparison

II. Modals

Unit-4 Grammar and Usage

I. Sequence of Tenses

II. Elements of a Clause

(as discussed in Quirk and Greenbaum)

Unit -5

I. Paragraph Writing

मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना**		**75**
1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II **आन्तरिक मूल्यांकन** –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

कक्षा – संयुक्ताचार्य / शास्त्री प्रथम सेमेस्टर
पर्यावरण अध्ययन

1. इस विषय में प्राप्त अंक श्रेणी निर्धारण हेतु प्राप्तांकों में सम्मिलित नहीं किये जायेंगे।

2. इस विषय को अंतिम वर्ष तक चार अवसरों में उत्तीर्ण करना अनिवार्य होगा। इसके अभाव में छात्र को उपाधि प्रदान नहीं की जायेगी।

माध्यम हिन्दी / संस्कृत रहेगा।

पाठ्य बिन्दु

इकाई–1

पर्यावरण की अवधारणा, पर्यावरणीय अध्ययन की बहुविषयी प्रकृति, क्षेत्र एवं महत्त्व।

– जन जागृति की आवश्यकता

– भारत का जैव भौगोलिक विभाजन

– जैव विविधता का मूल्य, क्षय, उपयोग, उत्पादक, उपयोग, सामाजिकम, नैतिक, सौन्दर्यात्मक एवं वैकल्पिक मूल्य

– जैविक विविधता : वैश्वीय, राष्ट्रीय एवं स्थानीय विविधाएँ

– भारत का वृहद विविधताओं के राष्ट्र के रूप में

इकाई – 2

– जैव विविधता के संवेदनशील क्षेत्र

– जैव विविधता के संकट : वनों का विनाश, वन्य जीवों का अवैध शिकार, मानव एवं जीवों में प्रतिस्पर्द्धा

– भारत की संकटग्रस्त एवं क्षेत्र–सीमित प्रजातियाँ

– जैव विविधता का संरक्षण : कृत्रिम आवासीय संरक्षण एवं स्व– आवासीय संरक्षण

इकाई – 3

प्राकृतिक संसाधन

नवीकरणीय एवं अनवीकरणीय संसाधन,

प्राकृतिक संसाधन एवं सम्बन्धित समस्याएँ

– **वन संसाधन :** प्रयोग एवं दुरुपयोग, वनोन्मूलन, केस अध्ययन, इमारती लकड़ियों का दोहन, खनिजों के खनन एवं बान्धों का वन एवं आदिवासी जनजीवन पर प्रभाव।

– **जल संसाधन :** जल, बाढ़, सूखा, जल, विवाद, बांधों से लाभ व समस्याएँ इनका प्रयोग व अतिरेक प्रयोग, धरातलीय एवं भूमिगत जल का उपयोग एवं अतिरेक प्रभाव।

– **खनिज संसाधन :** प्रयोग एवं अतिदोहन, उद्योगों द्वारा उत्सर्जित अवशिष्ट का पर्यावरण प्रभाव।

इकाई – 4

– **खाद्य संसाधन :** ऊर्जा की बढ़ती हुई आवश्यकताएँ, नवीकरण योग्य एवं अनवीकरणीय स्रोत, वैकल्पिक ऊर्जा संसाधनों का उपयोग, केस अध्ययन।

– **ऊर्जा संसाधन :** ऊर्जा की बढ़ती हुई आवश्यकताएँ, नवीकरण योग्य एवं अनवीकरणीय स्रोत, वैकल्पिक ऊर्जा संसाधनों का उपयोग, केस अध्ययन।

– **भूमि संसाधन :** भूमि संसाधन के रूप में, भूमि का गुणात्मक निम्नीकरण, भूस्खलन, मृदा अपरदन व मरुस्थलीकरण। प्राकृति संसाधनों के संरक्षण में व्यक्तिगत योगदान। प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग एवं सुस्थिर जीवन शैली।

इकाई – 5

पारिस्थितिकी यंत्र

– पारिस्थितिकी तंत्र की अवधारणा।

– पारिस्थितिकी तंत्र की संरचना एवं कार्यप्रणाली।

– पारिस्थितिकी तंत्र के उत्पादक, उपभोक्ता एवं अपघटक।

– पारिस्थितिकी तंत्र में ऊर्जा प्रवाह।

– पारिस्थितिकी तंत्र की खाद्य श्रृंखला, खाद्य जाल के पारिस्थितिकी पिरामिड

निम्न पारिस्थितिकी तंत्र के बिन्दुओं का परिचय, प्रकार, विशेषताएँ, स्वरूप एवं कार्यः

1. वन पारिस्थितिकी तंत्र
2. घास के मैदान–पारिस्थितिकी तंत्र
3. मरुभूमि पारिस्थितिकी तंत्र
4. जलीय पारिस्थितिकी तंत्र (तालाब, झरना, झील, नदी, महासागर, खाड़ी)।

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**75**
1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि)	**25**
कुल अंक (I+II)	**75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री प्रथम सेमेस्टर

ELEMENTARY COMPUTER APPLICATIONS

Unit-I

Introduction to computer and Related Terminology (Basic information only)

(a) Hardware : CPU (Motherboard, Microprocessor. The Intel Pentium III. AMD and Cyrix). MMx Technology. System clock Address Bus, Data Bus (PCI and EISA) Cache Memory,

Processing, Speed, Expansion Slots (Video Controller, Sound Cards. SCSI. Network Card) Memory-(Unit, RAM, ROM, EDORAM, SD RAM). Input and Output Devices (Keyboard, The standard keyboard Layout), Mouse, Printers-(Dot matrix, Ink-jet, Laser-jet) Microphone, Speakers, Modem, Scanner, Density, Formating Boot Record, FAT-Folder Directory). Hard Disk Drive CD ROM Drive (CD ROM Speeds) (CD-R Drive-DVD Rom Drive, Tape Drive).

Unit-II

(a) Software : Introduction to Programming languages System Software (Operating Systems and Utilities). Application Software (Word Processors,, DBMS). Presentation Graphics. Browsers. Personal Information Managers) Introduction to Multilingual Word-processors.

Unit-III

(a) Communications and Connectivity : Data Communication systems. Data Transmission (Serial Parallel, bandwidth. Protocols). E-Mail, FAX,Voice and Video massaging. Video Conferencing Online Services user connection (types) Networking of Computers (Node. Client, Serve LAN. WAN). Using the network. The Internet and the web.

Operating System

Unit-IV

(Working Knowledge at Common Users Level Only)

Overview of important DOS commands. Windows 98 : Installation, Scandisk. Control Panel, Taskbars, Tool bars Display, Settings (Background, Wallpaper, Screensaver, Desktop Themes). Files and Folder managements, window Explorer, finding Files and folders.

Unit-V

formating Disks and Copying files, Printer Settings, Modem Installation, Mouse Installation, Adding and Removing Programs, Active Desktop Concepts, Win Zip and its applications, Norton Antivirus and its use. Use of Calculator, Paintbrush, Winamp MPEG player and windows help.

मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना** **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12

2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री प्रथम सेमेस्टर
वैकल्पिक मुख्य विषय/सामान्य ऐच्छिक (GE)/कौशल अभिवृद्धि (SEC)

ENGLISH LANGUAGE AND LITERATURE

The Syllabus aims at Achiveing the following objectives

1. Comprehension and analysis of texts in English, both literary and non literary.
2. Practival applications in English

   a) Transcoding (From Pictures to prose)

   b) Telephonic Communication

   c) Writing for a purpose.
3. Understanding texts with specifice reference to genres, forms and literary terms.

Paper I

Poetry and Drama

UNIT I

The following poems from Strings of Gold Part I Ed. Jasbir Jain (Macmillan).

Williams Shakespeare

1) Shall I Compare Thee

2) Not Marble, nor the Guilded Monuments

3) The Marriage of True Minds

John Donne

1) Go and Catche a Falling Starre

2) The Sunne Rising

UNIT II

The following poems from Strings of Gold Part I Ed. Jasbir Jain (Macmillan).

John Milton

1) On His Blindness

2) On His Twenty Third Birthday

John Dryden

1) A Song for St. Cecilia's Day

UNIT III

Kabir

1) It is Needless to Ask a Saint the Caste to Which He Belongs,

Rabindra Nath Tagore

1) Where The Mind is Without Fear

Toru Dutt

1) The Lotus

2) Our Casuarina Tree

UNIT IV

Sarojini Naidu

1) Indian Weavers

2) Song of Radha, the Milkmaid

Aurobindo

1) The Pilgrim of the Night

UNIT V

William Shakespeare : Merchant of Venice

Recommended Reading :

1. Trevelyri : A Social History of England
2. Boris Ford ed : Pelican Guide to English Literature.
3. History of Literature.

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य / शास्त्री द्वितीय सेमेस्टर

Prose and Fiction

UNIT I

The Following essays from *English Prose Selection* (OUP) ed. Dr. S. S. Deo et. al. :

J. H. Newman	:	A Gentleman
R. L. Stevenson	:	EL Dorado
B. Russell	:	Machine and Emotions

UNIT II

The Following essays from *English Prose Selection* (OUP) ed. Dr. S. S. Deo et. al. :

M. K. Gandhi	:	Fearlessness
S. Radhakrishnan	:	Democracy
H. Belloc	:	On Educational Reform
J. L. Nehru	:	Animals in Prison

UNIT III

The following short stories from the collection *Popular Shart Stories* edited by Board of Editors (O.U.P.) :

Katherine Mans field	:	A cup of Tea
H. H. Munro (Saki)	:	The Open Window
R. K. Narayan	:	The Gateman's Gift
R. Tagore	:	Living or Dead?
E. Hemingway	:	Old Man at the Bridge

UNIT IV

George Orwell : Animal Farm

UNIT V

The following Units from *English At The Workplace* eds. Sawhney, Panja and Verma (Macmillan).

Unit 2	:	Language and Culture
Unit 6	:	From Pictures to Prose
Unit 7	:	Writing with a Purpose.
Unit 9	:	Talking on the Telephone/

Recommended Reading :

Vandana R. Singh. *The Written Word* (OUP)

मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना**		**75**
1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12	
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18	
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32	
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05	
5. लघु टिप्पणी	2x4 = 08	

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय

कक्षा – संयुक्ताचार्य / शास्त्री प्रथम सेमेस्टर
वैकल्पिक मुख्य विषय / सामान्य ऐच्छिक (GE) / कौशल अभिवृद्धि (SEC)

हिन्दी साहित्य

आदिकाल एवं भक्तिकाल

इकाई – 1

१. **विद्यापति** 1. नन्दक नन्दन कदम्बेरि तरुतरे

2. सुन रसिया, अब न बजाऊ बिपिन बँसिया

3. विरह व्याकुल बकुल तरुतर, पेखल नन्द–कुमार रे

4. कुंज–भवन सँ चलि भेलि हे

5. सखि हे कतहुँ न देखि मधाई

(विद्यापति – शिवप्रसाद सिंह)

इकाई – 2

१. **कबीरदास** 1. मन के अंग – प्रथम 15 साखी

2. दुलहिनीं गावहुँ मंगलचार

3. संतों भाई आई ग्यांन की आँधी रे

4. पंडित बाद बदंते झूठा

5. काहे रे नलिनी तूँ कुम्हिलानी

6. अरे इन दोऊ न राह न पाई

(कबीर ग्रंथावली – श्यायमसुन्दर दास)

२. **जायसी –** षट् ऋतु वर्णन खण्ड (जायसी ग्रंथावली – रामचन्द्र शुक्ल)

इकाई – 3

१. **सूरदास** भ्रमर गीत सार – रामचन्द्र शुक्ल

पद संख्या – ८, १५, २१, ३१, ३६,४१, ५२, ६४, ६५, ११६, १३०, २३७, ३१६, ३७५, ४००

२. **मीराबाई** सं नरोत्तम स्वामी

पद संख्या – १, ३, ४, ५, १०, ११, १२, १४, १५, १६, २०, २३, २८, ३१, ३२

इकाई – 4

१. **तुलसीदास** अयोध्या काण्ड – १२७ दोह से १३३ तक (प्रकाशक – गीताप्रेस गोरखपुर)

२. **कवितावली** ५ पदः राम वन–गमन (प्रकाशक – गीताप्रेस गोरखपुर)

इकाई – 5

१. **रसखान** कुल १५ सवैया (सवैया संख्या – १, २, ३, ५, ७, ११, १८, २१, २५, २७, ३२, ३४, ३७, ४१) रसखान रचनावली – सम्पादकः विद्यानिवास मिश्र

२. **नंददास** भँवर गीत

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना		**75**
1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12	
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18	
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32	
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05	
5. लघु टिप्पणी	2x4 = 08	

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री द्वितीय सेमेस्टर

कहानी, रेखाचित्र तथा संस्मरण

इकाई – 1

१. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी – बुद्धू का काँटा

२. प्रेमचंद – पूस की राज

३. विश्वंरनाथ शर्मा कौशिक – ताई

इकाई – 2

१. जयशंकर प्रसाद – पुरस्कार

२. जैनेन्द्र – पाजेब

३. यशपाल – परदा

इकाई – 3

१. उषा प्रियंवदा – वापसी

२. रांगेय राघव – पंच परमेश्वर

इकाई – 4

शिवपूजन सहाय – महाकवि जयशंकर प्रसाद

सेठ गोविन्ददास – मकदूम बख्श

रामवृक्ष बेनीपुरी – रजिया

हजारीप्रसाद द्विवेदी – एक कुत्ता और एक मैना

विष्णुकान्त शास्त्री – ये हैं प्रोफेसर शशांक

इकाई – 5

अज्ञेय – स्मरण का स्मृतिकार (राय कृष्णदास)

नगेन्द्र – दादा स्व. पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

माखनलाल चतुर्वेदी – तुम्हारी स्मृति

महादेवी वर्मा – निराला भाई

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय

कक्षा – संयुक्ताचार्य / शास्त्री प्रथम सेमेस्टर
वैकल्पिक मुख्य विषय / सामान्य ऐच्छिक (GE) / कौशल अभिवृद्धि (SEC)

इतिहास

भारत का इतिहास (प्रारम्भ से लगभग 1200 ई. तक)

इकाई – 1

1200 ईस्वी तक भारत के इतिहास के मुख्य स्रोत। भारत की प्रागैतिहासिक संस्कृतियों का संक्षिप्त सर्वेक्षण। सिन्धु–सरस्वती सभ्यता – उद्गम, विस्तार, प्रमुख विशेषताएँ, पतन एवं निरंतरता। वैदिक युग – वैदिक साहित्य, राजशासन, समाज, अर्थव्यवस्था एवं धर्म।

इकाई – 2

भारत की लौहयुगीन संस्कृतियों का संक्षिप्त सर्वेक्षण। जनपदों एवं महाजनपदों का उदय – राजतंत्र एवं गणतंत्र। नंद वंश तक मगध साम्राज्यवाद का उत्कर्ष। जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म – उद्गम, शिक्षाएं, योगदान। मौर्य साम्राज्य – मुख्य स्रोत। चन्द्रगुप्त मौर्य एवं अशोक। अशोक का धम्म – इसकी प्रकृति एवं प्रचार। मौर्यकालीन राज्य एवं प्रशासन, समाज एवं अर्थव्यवस्था, कला एवं स्थापत्य। मौर्य का पतन।

इकाई – 3

मौर्योत्तर काल (लगभग 200 ई. पू. से 300 ईस्वी) – शुंगों, सातवाहनों, शकों एवं कुषाणों की उपलब्धियाँ। मौर्योत्तर काल में सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक जीवन, तथा साहित्य एवं कलाओं का विकास। संगम युग – साहित्य, समाज, अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति।

इकाई – 4

गुप्त साम्राज्य – समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य, स्कंदगुप्त की उपलब्धियाँ। राज्य एवं प्रशासनिक संस्थाएँ। सामाजिक एवं आर्थिक जीवन। धार्मिक विचार एवं संस्थाएँ। साहित्य कला एवं विज्ञान का विकास। 750 ईस्वी तक गुप्तोत्तर काल – वर्धनों, चालुक्यों एवं पल्लवों की उपलब्धियाँ।

इकाई – 5

त्रि–राज्यीय संघर्ष। साम्राज्यवादी चोल एवं उनकी उपलब्धियाँ। 750 से 1200 ईस्वी के काल में सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों का अध्ययन तथा सांस्कृतिक जीवन का संक्षिप्त सर्वेक्षण।

¥Ùéàæ´çâÎ »ý‹Ì Ñ

v. H.D. Sankalia – Prehistory of India, Musnshiram Manoharlal, New Delhi, 1977

2. Dilip K. Chakrabarti – India: An Archaeological History (Pelaeolithic Benginnings to Eerly Historic Foundations), Oxford University Press, New Delhi, 1999

3. B.B. Lal – India 1947-1997 : New Light on the Indus Civilisation, Delhi, 1998

4. R.K. Mookerji – Chandragupta Maurya and His Times, Delhi, 1952 (also in Hindi)

   Asoka, Delhi, 1972 (also in Hindi)

5. B.N. Puri – India under the Kushanas, Bombay, 1965

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री द्वितीय सेमेस्टर

राजस्थान के इतिहास

(आरंभिक काल से 1956 ईस्वी तक)

इकाई – 1

राजस्थान के इतिहास के स्रोतों का सर्वेक्षण। राजस्थान में पुरापाषाणकालीन एवं मध्यपाषाणकालीन संस्कृतियाँ। ताम्रपाषाणिक एवं ताम्रयुगीन संस्कृतियों का विस्तार एवं विशेषताएँ (आहाड, बालाथल, गणेश्वर)।

इकाई – 2

कालीबंगा संस्कृति की विशेषताएं। राजस्थान में मत्स्य जनपद एवं गणतांत्रिक जातियाँ। राजपूतों का उदय। गुहिलों, गुर्जर–प्रतिहारों एवं चाहमानों का उत्कर्ष एवं विस्तार।

इकाई – 3

राजस्थान में मुस्लिम आक्रमणों का राजपूत प्रतिरोध। महाराणा कुंभा एवं सांगा के अधीन मेवाड। महाराणा प्रताप का स्वतंत्रता के लिए संघर्ष। स्वातंत्र्य के लिए चंद्रसेन के प्रयास। सवाई जयसिंह का योगदान। राजस्थान में समाज एवं संस्कृति की मुख्य विशेषताओं का संक्षिप्त सर्वेक्षण (1200–1750 ईस्वी)। मीरा एवं दादू। कला एवं स्थापत्य – दुर्ग स्थापत्य, मंदिर।

इकाई – 4

राजस्थान में मराठा आक्रमण एवं उनका प्रभाव। ब्रिटिश प्रभुत्व का स्वीकार एवं इसके परिणाम। 1818 ईस्वी के पश्चात् प्रशासनिक एवं न्यायिक परिवर्तन। सामाजिक परिवर्तन – कन्या–शिशु वध एवं सती पर प्रतिबन्ध। आर्थिक परिवर्तन – भू राजस्व बंदोबस्त। नमक एवं अफीम व्यापार पर ब्रिटिश एकाधिकार। राजस्थान में 1857 का विप्लव।

इकाई – 5

राजस्थान में आर्य समाज का प्रभाव। कृषक आन्दोलनों एवं जनजातीय आंदोलनों का एक संक्षिप्त सर्वेक्षण। राजस्थान में प्रजामंडलों का गठन एवं स्वाधीनता संघर्ष। राजस्थान के राज्यों का एकीकरण।

¥Ùéàæ´çâÌ »ý‹Ì Ñ

v. Dasharath Sharma – Rajasthan through the Ages, Vol. I, Bikaner, 1966

Early Chauhan Dynasties, Delhi, 1975

2. G.N. Sharma - Rajasthan through the ages, Vol. II

Mewar and the Mughal Emperors

Social Life in Medieval Rajasthan

3. M.S. Jain - Rajasthan through the Ages, Vol. III

Surplus to Subsistence, Delhi, 1994

Concise History of Modern Rajasthan

4. D.C. Shukla - Early History of Rajasthan, Delhi, 1978

5. B.N. Puri - The History of the Gurjana-Pratiharas, Delhi, 1975

6. Shanta Rani Sharma – Society and Culture in Rajasthan c. A.D. 700-900, Delhi, 1996

7. V.S. Bhatnagar - Life & Times of Sawai Jai Singh (also in Hindi)

8. V.N. Misra - Rajasthan : Prehistoric and Early Historic Foundations,

Aryan Books Indernationla, New Delhi, 2007

9. H.D. Sankalia et al – Excavations at Ahar (Tambavati), 1961-62, Deccan College,

Poona, 1969

10. Rima Hooja - A History of Rajasthan, Rupa & Co., New Delhi, 2006

The Ahar Culture and Bayond, Oxford, 1988.

11. गोपीनाथ शर्मा – राजस्थान का इतिहास, आगरा

राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

राजस्थान के इतिहास के स्रोत, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

12. विशुद्धानन्द पाठक – उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास, लखनऊ

13. एम.एस. जैन – आधुनिक राजस्थान का इतिहास, जयपुर

14. रामप्रसाद व्यास – आधुनिक राजस्थान का वृहत् इतिहास, खण्ड I एवं खण्ड II राजस्थान हिन्दी ग्रथ अकादमी, जयपुर

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री प्रथम सेमेस्टर

वैकल्पिक मुख्य विषय/सामान्य ऐच्छिक (GE)/कौशल अभिवृद्धि (SEC)

लोक प्रशासन

लोक प्रशासन के तत्त्व

इकाई – 1

लोक प्रशासन का अर्थ प्रकृति व क्षेत्र, आधुनिक समाज में लोक प्रशासन का महत्त्व, लोक व निजी प्रशासन, लोक प्रशासन के अध्ययन का विकास

इकाई – 2

लोक प्रशासन एक सामाजिक विज्ञान के रूप में तथा लोक प्रशासन का अन्य सामाजिक विज्ञानों – राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, कानून व मनोविज्ञान से सम्बन्ध। लोक प्रशासन के अध्यन के उपागम – शास्त्रीय एवं मानवीय।

इकाई – 3

संगठन के सिद्धान्त औपचारिक एवं अनौपचारिक संगठन, पदसोपान, आदेश की एकता, नियंत्रण का क्षेत्र, समन्वय, केन्द्रीकरण विकेन्द्रीकरण सत्ता एवं उत्तरदायित्व।

इकाई – 4

मुख्य कार्यपालिका, सूत्र एवं स्टाफ अभिकरण, पर्यवेक्षण, प्रत्यायोजन्, नेतृत्व, संचार, निर्णय निर्माण, लोक सम्पर्क, प्रत्यायोजित विधान।

इकाई – 5

कार्मिक प्रशासन : नौकरशाही का अर्थ व प्रकृति, लोक सेवा एवं विकासशील समाज में इसकी भूमिका, वर्गीकरण, भर्ती, प्रशिक्षण, लोक सेवकों की पदोन्नति, लोक प्रशासन में मनोबल व अभिप्रेरणा।

अनुशंसित ग्रन्थ :

1. ए. अवस्थी एवं श्रीराम माहेश्वरी : लोक प्रशासन
2. सी. पी. भाम्भरी : लोक प्रशासन
3. विष्णु भगवान् एवं विद्या भूषणः लोक प्रशासन
4. बी. एल फड़िया : लोक प्रशासन
5. डॉ. रविन्द्र शर्मा : लोक प्रशासन के तत्व

6. मोहित भट्टाचार्य : लोक प्रशासन

7. फैलिक्स नीग्रो : मार्डर्न पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन

8. ओ. ग्लेन स्टॉइल : पब्लिक पर्सनल एडमिनिस्ट्रेशन

9. प्रसाद तथा अन्य : प्रशासनिक चिन्तक (हिन्दी में)

10. रूमकी बसु : लोक प्रशासन के तत्त्व (हिन्दी में)

11. सुरेन्द्र कटारिया : लोक प्रशासन के तत्व

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना		**75**
1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य / शास्त्री द्वितीय सेमेस्टर

भारत में लोक प्रशासन

इकाई – 1

भारतीय प्रशासन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, ब्रिटिश काल के प्रभावों के विशेष सन्दर्भ में, भारतीय प्रशासन की मुख्य विशेषताएँ

इकाई – 2

संघीय कार्यपालिका : राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्, केन्द्रीय सचिवालय, मंत्रीमण्डल सचिवालय।

इकाई – 3

गृह मंत्रालय, कार्मिक, पेंशन एवं लोक शिकायत मंत्रालय का संगठन व कार्यकरण, लोक उद्योगों के प्रमुख प्रकार : विभाग निगम एवं कम्पनी प्रणाली,

इकाई – 4

लोक उपक्रमों की संसदीय समिति, वित्तीय एवं कार्मिक प्रशासन : बजट निर्माण, बजट का संसद में अनुमोदन एवं बजट का क्रियान्वयन, वित्त मंत्रालय की भूमिका, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक।

इकाई – 5

भारतीय लोक सेवाओं का वर्गीकरण, अखिल भारतीय सेवाओं में भर्ती व प्रशिक्षण, प्रशासन पर नियंत्रण : विधायी, कार्यपालिका व न्यायिक नियंत्रण, प्रशासकीय भ्रष्टाचार, लोक परिवेदनाओं का निवारण, प्रशासनिक सुधार। प्रशासनिक सुधार आयोग एवं सरकारिया आयोग के विशेष सन्दर्भ में।

अनुशंसित पुस्तकें :–

1. एस. आर. माहेश्वरी : भारतीय प्रशासन
2. पी. शरण : पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन इन इंडिया
3. बी.बी. मिश्रा : एडमिनिस्ट्रेटिव हिस्ट्री ऑफ इंडिया
4. रमेश अरोरा एण्ड रजनी गोयल : इंडियन पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन
5. अवस्थी एण्ड अवस्थी : भारतीय प्रशासन
6. ए. अवस्थी : सेन्ट्रल एडमिनिस्ट्रेशन
7. होशियार सिंह एवं मोहिन्दर सिंह सचदेवा : भारतीय प्रशासन
8. बी. एल. फड़िया :'भारत में लोक प्रशासन
9. पी. डी. शर्मा एण्ड बी. एम. शर्मा : भारतीय प्रशासन
10. वी. एम. माहेश्वरी : एडमिनिस्ट्रेशन रिफॉर्म्स कमीशन
11. रविन्द्र शर्मा : भारत में लोक प्रशासन
12. एस. बी. चोपड़ा : भारत में लोक प्रशासन
13. सुरेन्द्र कटारिया : भारत में लोक प्रशासन
14. सुरेन्द्र कटारिया : कार्मिक प्रशासन
15. डी. डी. बसु : भारत का संविधान
16. जे. एन. पाण्डेय : भारत का संविधान

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**75**
1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री प्रथम सेमेस्टर
वैकल्पिक मुख्य विषय/सामान्य ऐच्छिक (GE)/कौशल अभिवृद्धि (SEC)

समाज शास्त्र

Principles of Sociology

UNIT I

Sociology : Meaning, Nature and Perspective.

UNIT II

Meaning of Society, Social Structure, Community and Culture.

UNIT III

Concepts : Status & Role, Social Groups, Social Stratification, Socialization, Social Norms and Values.

UNIT IV

Concept of Social Change and Modernization.

UNIT V

Social Processes : Cooperation, Competition and Conflict.

Books Recommended :

1. Kingley, Davis : Human Society (Also available in Hindi)
2. Michel, Haralambos : Sociology : Themes and Perspectives.
3. Harry M. Johnson : Sociology : A Systematic Introduction (Also available in Hindi)
4. Alex, Inkles : What in Sociology :
5. T. B. Bottomore : Sociology : A Guide to Problems and Literature.
6. Williams O.. Goode : Principles of Sociology.
7. Singhi & Goswami : Samajshastra Ek Vivechan.
8. Giddings : Sociology.

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री द्वितीय सेमेस्टर

Social Anthropology

UNIT I

Social Anthropology - Definition and Scope.

UNIT II

1. Social Structure - Marriage and Family.
2. Kinship - Terms and Behaviour.

UNIT III

1. Culture - Its meaning. Theories of Culture Growth.
2. Magic and Religion.

UNIT IV

1. Custom and Law.
2. Primitive Economy.

UNIT V

1. Problems of Tribes in India.
2. Tribes in Rajasthan.

Books Recommended.

1. Majumdar and Madan : Introduction of Social Anthropology (Also available in Hindi)
2. Yogesh Patel : Adiwast Bharat.
3. N. N. Vyas : Bheel.
4. M. J. Herskovits : Man and His Works.
5. Beals and Goijer : Horizons of Anthropology.
6. D. N. Majumdar : Races and Culture of India.
7. Evans - Pritchard : Social Anthropology.
8. Joshi : Samajik Manav Shastra.
9. Singh : Tribes in Transition.

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना		**75**
1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12	
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18	
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32	
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05	
5. लघु टिप्पणी	2x4 = 08	

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री प्रथम सेमेस्टर
वैकल्पिक मुख्य विषय/सामान्य ऐच्छिक (GE)/कौशल अभिवृद्धि (SEC)

अर्थशास्त्र

Economic Concepts and Methods

UNIT I

Basic economic problems, Assumptions in Economic analysis, Rationality in consumer's behaviour Stock and flow variables. Positive and normative analysis. Equilibrium - Partial and general. Properties of different markets; Perfect competition, monopoly, oligopoly and monopolistic competition.

UNIT II

Concept of national income, Circular flow of income, component and measurement of national income, Relationship between per-capita national income and economic welfare.

UNIT III

Money-Function of money, currency and credit, velocity of circulation of money, Introduction to the concept of demand for and supply of money. Money supply and prices. Internal and external value of money. Exchange rate and foreign exchange market, Functions and methods of credit control of Central Bank. Role and functions of commercial Banks.

UNIT IV

Characteristics of capitalism, Socialism, Communism and mixed economy.

UNIT V

Functional relationship in economic and use of graphs. The concept and interpettalion of slop of curves (i. e. Total revenue and total cost curves, consumption and production functions. Simple derivatives, concepts of total average and marginal values. Introductory analysis with examples from cost revenue and production.

Book Recommended. :

1. P. A. Samuelson & J. Nordhans : Economics (Latest Ed.)
2. Laxmi Narayan Nathuramka : आर्थिक अवधारणायें एवं विधियाँ।
3. Mehta and Madam : Elementary Mathematics for use in Economics.

4. M. L. Chhipa and Shankerlal : आर्थिक अवधारणायें एवं विधियाँ।

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य / शास्त्री द्वितीय सेमेस्टर

Economy of Rajasthan.

UNIT I

Rajasthan's physiography : Climate. vegetation and soil and physical divisions of Rajasthan.

Population : Size and growth. Rural and Urban Population. Human resource development indicators (i. e. Literacy, health, Nutrition etc.) and occupational sturcture.

UNIT II

Natural resoureces : Mines & minerals, forests, land & water and animal resources, State domestic product and its trends, Environmental Population.

Agriculture : Land utilization and cropping pattern, food and commercial crops. Land reforms, Salient features of Rajasthan Tenancy Act, 1956. Ceiling of land and distribution of land to the poor. Major irrigation and power projects. Importance of animal husbandry, Dairy development programmes, Problems or Sheep and Goat husbandry.

UNIT III

Industry : Growth and location of industries, Small scale and cottage industries, Industrial exports from Rajasthan, Handicarafts, Policy of Rajasthan. Fiscal and financial incentives for industies. Developement of industrial area. Role of RFC, RIICO and RAJSICO in industrial development.

Drought and famine in Rajasthan. Short term and long term drought management strategies.

Tourisin Development : Its role in the economy of the state, Problems and prospects. Strategy of Tourism development in the state.

UNIT IV

Economic Planning and Development in Rajasthan : Objectives and achievements of the latest five year plan. Agricultural and Industrial development during the plan period, constrants uneconomic development of Rajasthan and measures to over-come them.

Problems of poverty and unemployment in Rajasthan. : Maganitude of poverty and special programmes for its alleviation and employment generation. IRDP and JRY.

UNIT V

Special area programmes : DPAP, Desert development, tribal area and aravalli development programmes.

Present Position of Rajasthan in Indian Economy size of population, per-capita income, agriculture, industry, infrastructure power and roads.

Current budget of Government of Rajasthan.

Books Recommended :

1. Ashok Bapna (ed.) : Industrial Potential of Rajasthan.
2. Laxmi Narayan Nathuramka : राजस्थान की अर्थव्यवस्था।
3. Mohan Singhal : राजस्थान की अर्थव्यवस्था।

References :

1. Directorate of Economics and Statistics, Govt. of Rajasthan : State Income of Raj.
2. Govt. of Raj. : Five Year Plan documents.
3. Govt. of Raj. : Budget Studies.
4. Govt. of Raj. : Statistical Abstact of Raj.
5. Govt. of Raj. : Report of Desert Dev. Commission.
6. Directorate of Agriculture, Govt. of Raj. : Agriculture in Rajasthan.
7. Directorate of Public Relations. Govt. of Rajasthan Land Reforms in Rajasthan.

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री प्रथम सेमेस्टर

वैकल्पिक मुख्य विषय/सामान्य ऐच्छिक (GE)/कौशल अभिवृद्धि (SEC)

राजनीति विज्ञान

इकाई – 1

राजनीति विज्ञान : परम्परागत और आधुनिक दृष्टिकोण, व्यवहारवाद व उत्तर व्यवहारवाद, राजनीति विज्ञान के अन्तः अनुशासनात्मक दृष्टिकोण,

इकाई – 2

राजनीति विज्ञान का अन्य समाज विज्ञानों से सम्बन्ध, अवधारणाएँ : शक्ति, सत्ता व वैद्यता।

इकाई – 3

राजनीति व्यवस्था, राजनीतिक आधुनिकीकरण, राजनीतिक विकास, लोकतंत्र, निरंकुशता, राजनैतिक दल व दबाव समूह, प्रतिनिधित्व के सिद्धान्त,

इकाई – 4

विधि का शासन व संविधानवाद, शासन के अंग व उसके कार्य (आधुनिक दृष्टिकोणों के विशेष सन्दर्भ में)

इकाई – 5

राजनीतिक विचारधाराएँ : उदारवाद, प्रत्ययवाद, मार्क्सवाद, लोकतांत्रिक समाजवाद व अराजकतावाद।

अनुशंसित ग्रन्थः

1. एस.एन. दुबे : डवलपेंट एण्ड पॉलिटिकल थाट इन इण्डिया
2. इकबाल नारायण : राजनीति शास्त्र के सिद्धान्त
3. पुखराज जैन : राजनीति शास्त्र के मूल आधार
4. पी. के. चड्ढा : राजनीति शास्त्र के मूल आधार
5. आर. सी. अग्रवाल : राजनीति शास्त्र के सिद्धान्त

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18

3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32

4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05

5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री द्वितीय सेमेस्टर

प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक

इकाई – 1

मनु, कौटिल्य व शुक्र।

इकाई – 2

राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती,

इकाई – 3

गोपालकृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक व मोहनदास कर्मचन्द गांधी।

इकाई – 4

बी. आर. अम्बेडकर

इकाई – 5

जवाहर लाल नेहरू, एम. एन. राय व जय प्रकाश नारायण।

अनुशंसित ग्रन्थः

1. श्याम नारायण पाण्डेय : भारतीय राज्य शास्त्र प्रणेता।
2. परमात्मा शरण : प्राचीन भारत में राजनीतिक चिन्तन व संस्थाएँ।
3. जे. पी. सूद : मेन करन्ट्स ऑफ इण्डियन पॉलिटिकल थॉट (हिन्दी व अंग्रेजी)
4. एस. एल. वर्मा व बी. एसम. शर्मा : प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक।
5. वी. पी. वर्मा : भारतीय राजनीतिक व सामाजिक चिन्तन।
6. अवस्थी व अवस्थी : प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक चिन्तन।

7. पुरुषोत्तम नागर : आधुनिक भारतीय चिन्तन।

8. पी. के. चड्ढा : प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक।

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना	**75**
1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री प्रथम सेमेस्टर

वैकल्पिक मुख्य विषय/सामान्य ऐच्छिक (GE)/कौशल अभिवृद्धि (SEC)

Home Science

Notes :-

1. Laundry & Textiles 1. Practical / week.
2. Clothing Practicals 2. Practical / week.
3. Only laundry and Textile Practical examination to be held in Ist Year. Clothing Practical to be started in Ist Year, examination in 2nd year.

   Anatomy and Physiology Theory paper to be set by a medical person.

Health Science (Anatomy and Physiology)

(An elementary knowledge of the subject is expected).

UNIT I

1. Structure and functions of Cell. Different types of tissues.
2. The Skeletan System :

   (i) Development Structure and Function of Bone.

   (ii) Main bones of the body.

   (iii) The Joints classification. Structure of a typical syonvial joints.

UNIT II

1. The Muscular System : Types of muscles, structure and functions.
2. The respiratory System : Purpose of Respiration, structure and functions of all Respiratory organs, Mechanism of breathing, External and Internal (Tissue) Respirations, Vital captivity, Regulation of Respirations.

UNIT III

1. The Vascular System :

   (i) The Blood Composition and functions, Clotting of blood. Blood groups. Blood transfusion, Blood Banks.

(ii) The Heart Structure and functions. Blood vessels structure, Course of circulation of blood in the body, Blood pressure and pulse.

(iii) The Lymphatic System - Tissue Fluid and Lymph. Function of Lymph. Lymphatics and Lymphnodes. Spleen structure and functions.

2. The Digestive System :

Purpose of digestion, structure and function of all the digestive organs. Mechanism of digestion and absorption of proteins, fats and carbohydrates.

UNIT IV

1. The Excretory System :

(i) The urinary System : Structure and functions of all the organs- composition of Urine. Effect of diet, fluids, stimulants, exercise, climate etc. on secretion of urine.

(ii) The Skin structure and function. Regulation of body temperature.

2. The Nervous System :

(i) Meanings, Cerebro- spinal fluid.

(ii) Brain and Spinal Cord - Structure and functions.

(iii) Nerves and Autonomic Nervous system in brief.

UNIT V

1. The Special sense Organs :

(i) The Eye - structure and functions. Causes of eye strain, defects of vision and their correction.

(ii) The Ear- structure and functions.

(iii) The Tongue (with Digestive system).

(iv) The Nose (with Respiratory system).

(v) The Skin (with Excretory system).

2. The Endocrine System :

Ductless glands of the body. Hormones and their roles. Effects of over and under activity.

Books Recommended :

1. Anatomy and Physiology for Nurses : Eveiyn Pearce, Faber and Fader Ltd. London.

2. Anatomy, Physiology for Nurses : K. F. Armstrong.

3. Anatomy and Physiology for Nurses : W. Gordan Sears.

4. Uनर्सों के लिए शरीर सम्बन्धी ज्ञान – इविन पियर्स।

5. शरीर प्रदीपिका – मुकुन्द स्वरूप शर्मा।

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री द्वितीय सेमेस्टर

HOME SCIENCE

Textile and Laundry Work

UNIT I

1. (i) Textile Terminology.

   (ii) Classification of Textile Fibers.

   (iii) General Properties of Textile Fibers.

2. Textile Fibers : Properties and their importance to the consumer with special reference to the care of the following fibers.

   (i) Cotton, Silk,Wool, Asbestos

   (ii) Vicose, Rayon, Nylon, Polyster, Acrylic, Glass

3. Construction of Yarn and Fabric :

   (i) Spinning- Mechanical and Chemical

   (ii) Different types of yarns. Simple and Complex

(iii) Weaving, Felting, Knitting, Braiding.

4. Finishing :

(i) Basic Bleaching, Sizing and Dressing, Singering Tentering, Beetling, Mercerising Shrinkage - Control.

(ii) Embossing, Moiring and Napping.

5. Applied Design.

(i) Block printing, Screen printing and roller printing.

(ii) Dyeing : Types of Dyes (a) Tie and dya (b) Batil.

UNIT II

6. Care of Textiles:

(i) Water : Hard and soft water, Effect of hard water in laundry, Removal of hardness of water by (a) Boiling (b) Soda Treatment (c) Zeolite water Softening.

(ii) Laundary Agents : (a) Soaps and Detergents (b) Bleaches (c) Blues and other whitening agents (d) Solvents and Absorbents (e) Starches.

(iii) Care and Storage of Clothes.

7. Selection of Fabrics for various uses in the home.

(i) Garments keeping, in view:

(a) Climate, weather, conditions, Utility and Occassion

(b) Texture and line in relation to figure and Size.

(c) Fashion

(ii) Household linen and furnishing in reference with service durability and appearance.

UNIT III

8. Consumer Problems, Labelling, Standardisation and Quality Control.

9. Traditionla Embrodieries of different states.

10. (i) Traditional Textiles of India, Bandhani, lkat

(ii) Woven Textiles : Baluchari Brocade, Painthani

UNIT IV

Practical-I Introductory Textiles and care

1. Care of special clothes : fur, Lace, Leather

2. Dry cleaning with special reference to spot cleaning

3. Simple Home dyening. tie and Dyening, tie and dye

4. Stain removal

5. Identification of textile fibers : Visual and Buraing

6. Identification of Basic weaves : Plain, Twill and Stain

7. Simple colour fastness tests : 1. Washing 2. lroning

8. Conduct a market survey for collection fabric samples

   1. Apparel. 2. Linens. 3. Furnishing

UNIT V

Practical-II Needle work

1. (a) Equipment for printing, cutting and sewing

   (b) Sewing machine, its parts. common defects and how to remedy them.

2. Construction process in garment making.

   (a) Simple stitches

   (b) Seams and seam finishes

   (c) Darts, tucks, pleats and gathers.

   (d) Finishing of raw edges-turning down a hem, piping facing and top sewin

   (e) Placket openings

   (f) Fastners

3. Embroidery on any household article.

4. Knitting-10 samples reading knitting partners.

   Baba suit for two years old.

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना **75**

1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश / प्रायोगिक (Tutorial Components/Practical)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री प्रथम सेमेस्टर
वैकल्पिक मुख्य विषय/सामान्य ऐच्छिक (GE)/कौशल अभिवृद्धि (SEC)

PHYSICAL EDUCATION

History of Physical Education

Unit I:

1. Definition of Physical Education- its meaning and importace. Misconception about Physical Education.

2. Aims and objectives of Physical Education.

Unit II

1. Physical Education in Ancient India.

2. Physical Education in the city states of Greece.

Unit III

1. Survey of Modern Physical Education in India

   (a) Physical Education and Sports Training Institutions in India.

   (b) Sports Authority of India.

   (c) Arjuna Awards, Dronacharya Awards, Maulana Abdul Kalam Azad Trophy, National Sports scholarship.

Unit IV

Ancient & Modern Olympic Games: Start of Olympics, Objectives of Olympic, Olympic Moto and Flag, Olympic Charter, Opening and closing ceremonies,

Unit V

Contribution to the growth of Physical Education by leaders and movements.

(a) Turnverin Movement , Y.M.C.A. and its contribution U.S.S.R. Physical. Education in school , the sport kind.

(b) Contribution in India: G.D. Sondhi, Raj Kumari Amrit Kaur, Dr. P.M. Joseph, Shri H.C. Buck.

Books Recommended

1. Leonard, Field Engene and Affleck George B: Guide to the History of Physical Education , Philadelphia: Leo & Febiger: 1962 .

2. Rice Emmett. A. Hutchinson John L and Loc Marbal: A brief history of Physical Education, New York, The Renold Press Company 1960.

3. Rajgopalan K.A. : Brief History of Physical Education in India, Delhi Army Publishers- 1962.

4. Krishan Murthy, V. and Ram N. Parmeshwar: Educational Dimensions of Physical Education, New Delhi, Sterling Publications 1980.

5. Singer,R.N.(ed): Physical Education: Foundations, New York: Hall Rinehert & Winston.

6. Khan Eraj Ahmed : History of Physical Education, Scientific Book Co. Patna.

7. कंवर रमेश चन्द : शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त व इतिहास, अमित ब्रदर्स, नागपुर

8. कमलेश व संग्राल : शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त तथा इतिहास, प्रकाश प्रदर्स लुधियााना।

9. मोहम्मद वाहिद और दीक्षित एन.के. : शारीरिक शिक्षा का इतिहास, डॉलीगंज रेल्वे क्रासिंग लखनऊ।

10. वैष्णव राजेन्द्र प्रसाद : शारीरिक शिक्षा का संगठन व विधियाँ, श्रीयांश पब्लिकेशन्स, जयपुर।

11. सिढ़ाना अशोक कुमार : शारीरिक शिक्षा सिद्धान्त, मनोविज्ञान एवं इतिहास, श्रीयांश पब्लिकेशन, जयपुर।

12. पाण्डेय लक्ष्मी कान्त : शारीरिक शिक्षा की शिक्षण पद्धति, मैट्रोपोलिटन बुक्स कं. प्रा. लि. नई दिल्ली।

13. अजमेर सिंह और अन्य : शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य एवं खेलों की आधुनिक पाठ्य पुस्तक (बी.ए. पार्ट I, II व III) कल्यानी पब्लिकेशन्स, लुधियाना।

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना		**75**
1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4	= 12
2. व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6	= 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8	= 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5	= 05
5. लघु टिप्पणी	2x4	= 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री द्वितीय सेमेस्टर

Foundation of Physical Education

Unit I: Biological & Psychological Foudations

1. Heredity, Environment in its importance and stages of growth and development.
2. Principles governing physical and motor growth and development.
3. Chronological, Anatomical, Physiological and Mentalages of individuals - their implications in developing and implementing programme of physical education.
4. Importance and implication of psychological elements in physical education.
5. Notions about mind and body and psycho-physical unit of man.
6. Conditions and factors effecting learning.

Unit II: Philosophical Foundations:

1. Idealism and Physical Education.
2. Pragamation and Physical Education.
3. Naturalism and Physical Education.
4. Existantialism and Physical Education.

Unit III: Physiological Foundations:

1. General Benefits of exercise.
2. Benefit of exercise to the various systems.
3. Kenesthetic sense and performance.

Unit IV: Sociological Foundations:

1. Physical Education and Sports as a need of the society.
2. Sociological Implications of physical Education and sports.
3. Physical activities and sports as a man’s cultural heritage.

Unit V: Practical

The practical examination shall be conducted by a panel of two examiners to be appointed by the University.

A candidate shall be required to show his/her familiarity (Rules & Techniques) and to give his performance in the following -

1. Atheletics - Sprints. High Jump, Long Jump, Short put, Discus and Relays. (This is compulsory. This shall carry 40 marks)

2. A candidate may choose any one of the following games -

Basket Ball, Football, Kabaddi & Volley ball, Swimming

Books Recommended:

1. Bucher Charles A : Foundation of Physical Education St. Louis The C.V. Hosby Company, 1986.
2. Nixon Engence D. and Couson. W.:An Introducation to Physical Education Philadelphia, London: W.B. Saunders Co. 1969.
3. Oderateuter Delbert : Physical Education, New York, Harper and Brothers Publishers, 1970.
4. Sharma, Jakson R. : Introduction to Physical Education. New York : A.S. Barnes and Company. 1964.
5. Williams Jeses Feiring : The Principle of Physical Education Philadelphia : W.B. Saunders Company, 1964.
6. Kamlesh H.L. : Physical Education Facts & Foundation, P.B. Pub. Faridabad.
7. कमलेश एम. एल. : शारीरिक शिक्षा के सैद्धान्तिकी मैट्रोपॉलिटन बुक्स कं. दिल्ली।
8. अजमेर सिंह और अन्य : शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य एवं खेलों की आधुनिक पाठ्य पुस्तक (बी.ए. पार्ट I, II व III) कल्यानी पब्लिकेशन्स, लुधियाना।
9. भाटिया ए. एल. और बघेला हेतसिंह : शरीर रचना, क्रिया शास्त्र, स्वास्थ्य शिक्षा, सुरक्षा शिक्षा, प्राथमिक चिकित्सा और आहार : श्रीयांश पब्लिकेशन्स, जयपुर।
10. कमलेश व संग्राल : शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त तथा इतिहास, प्रकाश प्रदर्स लुधियााना।
11. पाण्डेय लक्ष्मी कान्त : शारीरिक शिक्षा की शिक्षण पद्धति, मैट्रोपोलिटन बुक्स कं. प्रा. लि. नई दिल्ली।
12. मोहम्मद वाहिद और दीक्षित एन.के. : शारीरिक शिक्षा का इतिहास, डॉलीगंज रेल्वे क्रासिंग लखनऊ।

मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना** **75**

1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x4 = 12
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से) 3x6 = 18
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से) 4x8 = 32
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से) 1x5 = 05
5. लघु टिप्पणी 2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश / प्रायोगिक (Tutorial Components/Practical)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) 75+25 = 100

जगद्गुरुरामानन्दाचार्यराजस्थानसंस्कृतविश्वविद्यालयजयपुरम्

आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री प्रथम सेमेस्टर

वैकल्पिक मुख्य विषय/सामान्य ऐच्छिक (GE)/कौशल अभिवृद्धि (SEC)

COMPUTER APPLICATIONS

Introduction to Information Technology

Unit-I

Introduction to Computer - What is a Computer - Different Uses of Computer - Characteristics of Computer-Limitations of Computers-Generation of Computers-Units of Computer System - Block Diagram of Computer - Types of Computer - Hard ware and Software. Introduction to Input/Output and Storage Devices - Input Devices - Keyboard, Mouse, Seanner, Light Pen, Touch Screen, OCR, MICR, BCR- Out Devices - Monitors, Printers, and Plotters- Computer's Memory - Internal and External Memory - Various Storage Devices.

Unit - II

Software - Introduction - Types - System Software - Types, Features and Functions - Application Software - Types - Machine Language - Number System- Binary Number System - Octal Decimal Number System - Hex Decimal Number System - Binary Arithmetic - Boolean Algebra - Logical Gates - Assembly Language - High Level Languages.

Unit - III

Computer Networks - Terminology - Server - Workstations - Network Hardware - Hub, Switch, Bridge, Router- Communication Channels - Topologies - Advantages of Networks - Types of Networks - LAN, MAN, WAN. Internet - Advantages and Disadvantages - www- Protocols - FTP, HTTP, PPP, SMTP, TCP/IP, POP- Web Server - Web Browser- ISP - Types of Connections - Wib site - Types of Web sites - E- mail - Searching

Unit - IV

Operating Systems - Introduction, Features, Functions - Process Management, Memory Management, Multi tasking, Peripheral Device Manaement, Time-sharing - Types of Operating Systems - Real time Operating Systems, Single User Operationg Systems, Multi User Operating Systems. Introduction to MS DOS- Introduction, Features -File Systems - DOS commands, Command Syntax Elements-Internal Commands - MD, CD, DIR, COPY, DEL, RD, REN TYPE, ECHO, DATE, TIME, INPUT/OUTPUT Redirection, Wild Card characters, Files- Types of Files, File naming, File Attributes - Batch Files - Important DOS Files - AUTOEXEC. BAT, Config. Sys, Command, Com files- External Commands.

Unit - V

Micro Soft Windows

Introduction - Features -File system - FAT, FAT 32, NTFS - Terminology - Window, Mouse Pointer, Desktop, Task Bar - Folder, Short Cuts - Working with Windows - Creating folders, Removing Folders, Renaming Folders, Creating Short Cuts, Parts of Window - My Computer - My documents - My Network Places - Internet Explorer - Recycle Bin- Moving Items to Recycle Bin, Emptying Recycle Bin. Control Panel - Adding and Removing Hardware - Adding and Removing Programs - Administrative Tools - Working with DATE & TIME - Changing Display Settings - Working with Fonts - Network Connections- Adding Printers- Regional & Language Settings - Creating User IDs - Removing User IDs - Permissions.

Prescribed Text Book

P. K. Sinha - Computer Fundamentals

Reference Books

1. Comdex Information Technology Kit- by Vikas Gupta, Dreamtech
2. Introduction to Computers by Rajaraman.

मूल्यांकन प्रविधि –

I प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना		**75**
1.	अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12
2.	व्याख्या/विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18
3.	प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32
4.	सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक/पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05
5.	लघु टिप्पणी	2x4 = 08

II आन्तरिक मूल्यांकन –

शैक्षणिक अंश (Tutorial Components)

(प्रोजेक्ट/बहस/पत्रवाचन/असाइन्मेंट/सामयिक परीक्षा आदि) **25**

कुल अंक (I+II) **75+25 = 100**

कक्षा – संयुक्ताचार्य/शास्त्री द्वितीय सेमेस्टर

PC- Packages

Unit - I

MS- Word - Introduction, Word Processor basics, Guide lines for typing, Menus in MS Word, Saving the Document, Opening the Documents, Previewing and Printing the document, Page Settings, Editing the document, Find, Replace and Goto, Header and Footer, Foot notes - Inserting Pictures,

files- Organization chart - Working with Clip Arts, Auto shapes - Formatting the document, Bullets and Numbering, Document alignment- Spelling and Grammatical Check - Thesaurus - Mail Merge, Macros, Creating Tables - Sorting, Converting, Applying Formula

Unit - II

MS- Excel

Introduction - Features - Spread Sheet basics - labels, Values and functions- Saving the Work book, Printing - Set print area - Cell and Cell Address- Cell Pointer - Mathematical Calculations - Formaulas, Formula bar, Automatic Recalculation - Function - Arithmetic Functions, String Functions, Date and Time Functions - Financial Functions - Formatting Spread Sheet - Inserting and deleting rows, columns - Sorting - Adding a Sheet to the workbook - renaming the sheet - copying data between sheets - protecting the workbook - deleting sheet from the work book-

Working with Charts

Unit - III

MS- Power Point

Introduction- Features - Creating Presentations - Open the Presentation, Saving - Slides - Inserting Slides - Delete slides - Normal, Slide Sorter, Slide Show, Grid Guides - Inserting Pictures, Sounds, Movie- Slide Design, Slide layout, Adjusting back ground, Using Templates- Slide Show, Action Buttons, Custom Animation

Unit - IV

MS- Access

Introduction - Features - Database - Under Stating RDBMS - Objects of RDBMS - Tables, Queries, Reports - Functions of Database Management Systems - Creating a Database - Creating a Table - Fields, Data types, Field Name conventions - Indexes - Keys - Query- Creating a Query - Types of Queries - using criteria - building expressions - running the query. Working with Forms - Basic Controls - Properties-Navigating the records-Adding New Record-Deleting a Record from the Form-Woriking with Reports-Understanding the Sections of Reports - Basic Controls - Setting Properties - Perviewing the Report.

Unit – V

Practical

1. Human Maze Learning, 2. Measurement of Intelligence, 3. Experiment of Memory Meaningful and non-sense syllabus. 4. Span of Attention, 5. Serial Position Curve, 6. Figure Ground Reversal, 7. Measurement of Emotions by Facial Expression. 8. Measurement of Personality by Questionnaire, 9. Problem Solving, 10. Mirror Drawing.

Prescribed Text Books

1. R. K. Taxali - MS Office

2. MS-Office - BPB Publications

Reference Books

1. Comdex Information Technology Course Kit - by Vikas Gupta, Dreamtech

मूल्यांकन प्रविधि –

I **प्रश्नपत्र एवं अंकविभाजन की आधारभूत संरचना**		**75**
1. अर्थकरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x4 = 12	
2. व्याख्या / विवरण – 3 (सभी यूनिट से)	3x6 = 18	
3. प्रश्न – 4 (सभी यूनिट से)	4x8 = 32	
4. सम्बन्धित पाठ्यांश से सैद्धान्तिक / पारिभाषिक अर्थ की टिप्पणी (सभी यूनिट से)	1x5 = 05	
5. लघु टिप्पणी	2x4 = 08	

II **आन्तरिक मूल्यांकन –**

शैक्षणिक अंश / प्रायोगिक (Tutorial Components/Practical)

(प्रोजेक्ट / बहस / पत्रवाचन / असाइन्मेंट / सामयिक परीक्षा आदि) **25**